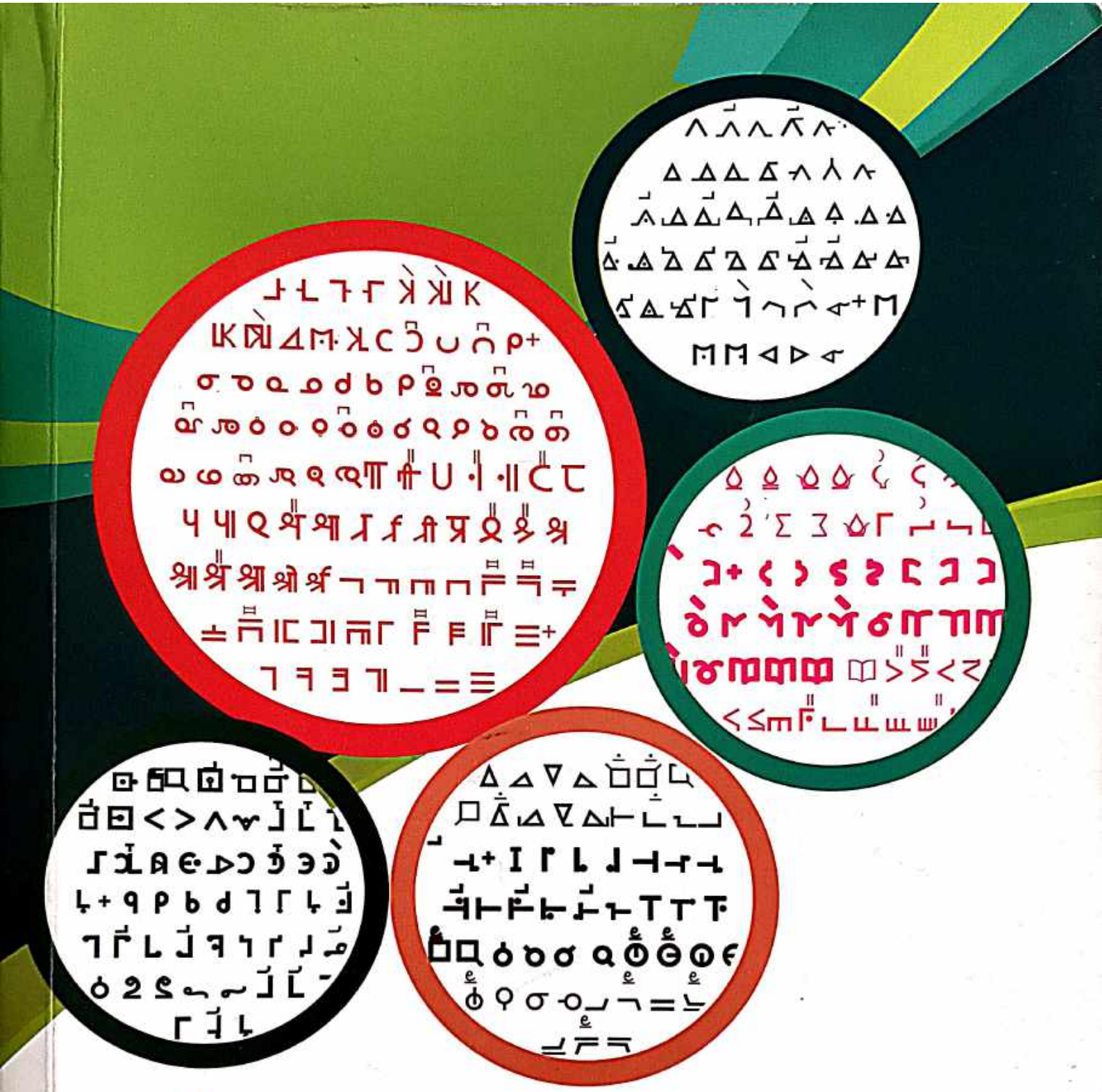

अठारह लिपियाँ

लिपिकर्ता : भारत गौरव, गणाचार्य डॉ. विरागसागर महाराज

प.पू. वात्सल्य रत्नाकर गुरुदेव
आचार्य श्री विमलसागर जी महामुनिराज

प.पू. तपस्वी सम्राट
आचार्य श्री सन्मतिसागर जी महामुनिराज

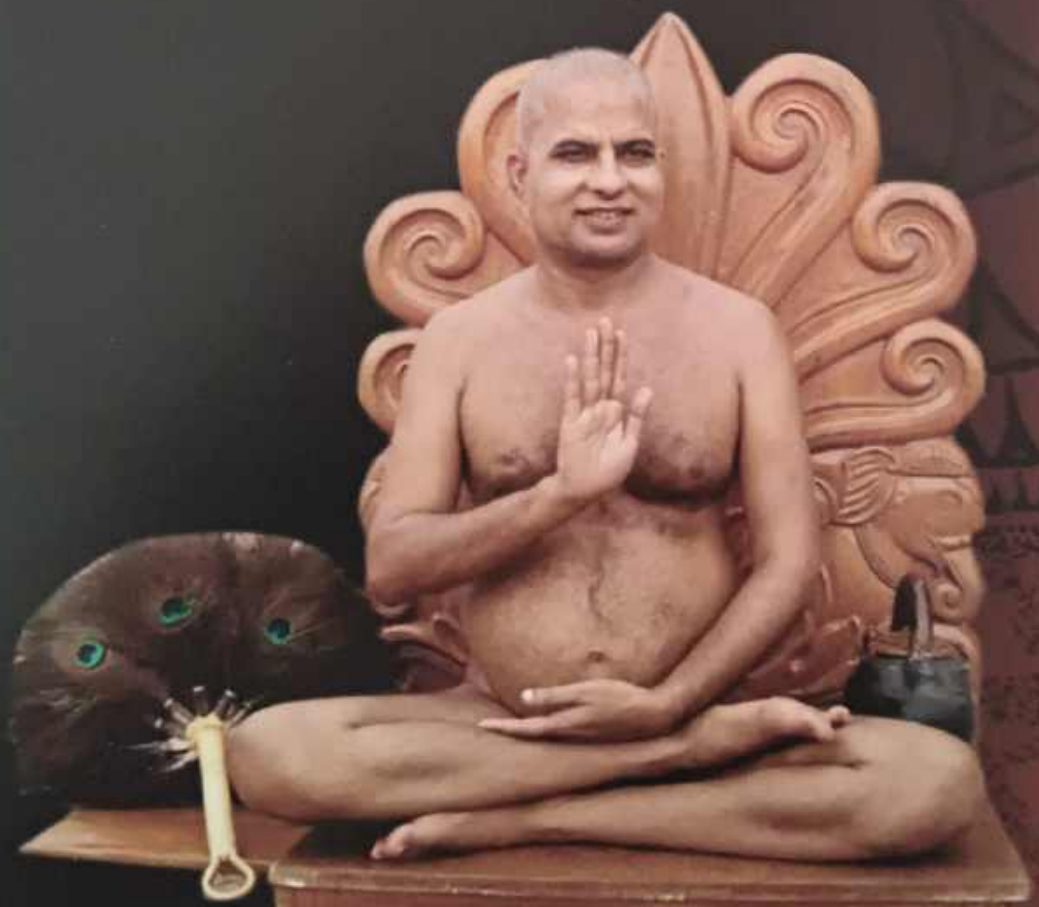

भारत गौरव प.पू. राष्ट्रसंत गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज

अठारह लिपियाँ

लिपिकर्ता : भारत गौरव, गणाचार्य डॉ. विरागसागर महाराज

प्रकाशक :

श्री सम्यग्ज्ञान प्रकाशन

श्री सम्यग्ज्ञान दिगम्बर जैन विराग विद्या पीठ

कीर्ति स्तम्भ, भिण्ड (म.प्र.)

प्रसंग

श्रीमज्जिनेन्द्र पंचकल्याणक महोत्सव एवं तृतीय यतिसम्मेलन–युगप्रतिक्रमण

विरागोदय तीर्थ धर्मधाम, पथरिया–2023

•••

कृति : अठारह लिपियाँ

•••

कृतिकार :

भारत गौरव, गणाचार्य डॉ. विरागसागर जी महाराज

•••

संस्करण प्रथम : प्रथम 2023 (1000 प्रतियाँ)

•••

प्रकाशन प्रेरणा : श्रमणी आर्यिका विजेताश्री माताजी

•••

मूल्य : 65/–

•••

प्रकाशन

श्री सम्यग्ज्ञान प्रकाशन

श्री सम्यग्ज्ञान दिगम्बर जैन विराग विद्यापीठ

कीर्ति स्तम्भ, भिण्ड (म.प्र.) मो. 9826287046

प्रस्तावना

– परम पूज्य भारत गौरव, गणाचार्य डॉ. विरागसागर महामुनिराज

''उपयोगो (जीव) **लक्षणम्''** उपयोग अर्थात् ज्ञान और दर्शन जीव का स्वाभाविक असाधारण लक्षण है। ज्ञान के बिना जीव तथा जीव के बिना कभी ज्ञान नहीं होता हैं दोनों में अविनाभाव संबंध है। ज्ञान का ही बुद्धि या विवेक उविकसित रूप है विद्या उसका एक साधन है।

ज्ञान (बुद्धि) निसर्गज (स्वाभाविक) होती है किन्तु विद्या अधिगमज (पुस्तक व गुरु आदि) के द्वारा प्राप्त की जाती है। भाषा और लिपि विद्या प्राप्त करने की महत्वपूर्ण सामग्री है भाषा बोली व सुनी जाती है किन्तु लिपि लिखी व पढ़ी जाती है।

भाषा :–

उपघात रहित इन्द्रियों वाले संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीवों की भाषा अक्षरात्मक भाषा है। अक्षरात्मक भाषा दो प्रकार की है– (1) कुभाषा (2) भाषा।

1. **कुभाषा**– काश्मीर, पारसीक, सिंहल, वर्वरिक आदि देशवासियों के मुख से निकली हुई भाषा कुभाषा है इसे क्षुद्र भाषा भी कहते हैं। उसके सात सौ भेद हैं।

2. **भाषा**– 3 कुरुक (कनड़) भाषा, 3 लाट (लाटी) भाषा, 3 मराठा (मराठी) भाषा, 3 मालव (मालवी) भाषा, 3 गौड़ (गौढ़ी) भाषा, 3 मागध (मागध) भाषा ये भाषाओं के 18 भेद हैं।

– ध.पु. 13/5, 5,26/221/11

अथवा भाषा के अन्य दो भेद हैं– (1) अक्षरात्मक (2) अनक्षरात्मक

– स.सि.5/24/294/12

अक्षर – **''न क्षरत्यत्यक्षरं''**।

– गो.सा./जी.प्र.टी.335/728/8

जिसका कभी विनाश नहीं होता है वह अक्षर है। अथवा

''सिद्धोवर्णसमाम्नायाः'' वर्णों की आम्नाय स्वभावतः अनादिसिद्ध है।

– कातन्त्र रूपमाला

अक्षर के मुख्य तीन भेद हैं– (1.) लब्ध्यक्षर (2.) निर्वृत्यक्षर (3.) संस्थानाक्षर

1. **लब्ध्यक्षर** :– लब्धि यानि श्रुतज्ञानावरण का क्षयोपशम। अक्षर यानि अविनाशी पर्याय ज्ञान अर्थात् श्रुतज्ञानावरण कर्म के क्षयोपशम से होने वाला पर्याय नामक भाव ज्ञान जो कि अक्षर ज्ञान की उत्पत्ति का कारण है।

– गो.जी./जी.प्र.टी. 322/622/4

यह ज्ञान सूक्ष्म निगोद लब्ध्यपर्याप्तक एकेन्द्रिय जीवों के पाया जाता है तथा उत्कृष्ट चौदह पूर्वधारियों को पाया जाता है।

– ध.12/5,5,48/265/4

2. **निर्वृत्यक्षरः**– जीवों के मुख से निकले हुये शब्द को निर्वृत्ति कहते है (इसे ही भाषा कहते है।) निर्वृत्ति के मुख्य दो भेद है। (1) **व्यक्त निर्वृत्यक्षर** – यह केवल संज्ञी पंचिन्द्रय पर्याप्त जीवों के ही होती है। (2) **अव्यक्त निर्वृत्यक्षर** – द्वीन्द्रिय से संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीवों के होती है।

– ध. पु.13/5,5,48/265/11

कंठ, ओठ, तालु आदि अक्षर बोलने के स्थान और ओठों का परस्पर मिलना या स्पृष्टता आदि से उत्पन्न हुआ शब्द रूप अकारादि स्वर और ककार आदि व्यंजन तथा संयोगी अक्षर को निर्वृत्यक्षर कहते हैं।

– गो.जी./जी.प्र.टी.333/728/9

3. **संस्थानाक्षर :–** जो लिखा जाता है वह संस्थान अक्षर है इसका ही दूसरा नाम स्थापना भी है।

–ध.13/5,5,48/265/4

इसे लिपि भी कहते हैं। ये सभी अक्षर तीन प्रकार के होते हैं।

''एक मात्रोह्रस्वः द्विमात्रो दीर्घः, त्रिमात्रः प्लुतः मात्रार्द्धव्यञ्जनम्''

– ध.पु.13/5,5, 46/248/3

एक मात्रोभवेद्ह्रस्वो, द्विमात्रो दीर्घ उच्यते।
त्रिमात्रस्तु प्लुतोज्ञेयो, व्यञ्जनं चार्ध मात्रिकम्।।

–लघु सि. कौमुदी

ह्रस्व :– एक मात्रिक जैसे– अ, इ, उ, ऋ, लृ, ए, ओ, अं, अः (9 स्वर)

दीर्घ :– द्विमात्रिक जैसे– आ, ई, ऊ, ॠ , लॄ, ऐ, औ (9 दीर्घ)

प्लुत :– त्रिमात्रिक जैसे – आ 3/ऽ ई 3/ऽ ऊ 3/ऽ ऋ 3/ऽ लृ 3/ऽ ए 3/ऽ ऐं 3/ऽ ओ 3/ऽ औ 3/ऽ (9 प्लुत)

व्यंजन :– अर्द्धमात्रिक जैसे– क्, ख्, ग्, घ्, ङ् (कवर्ग), च्, छ्, ज्,झ्, ञ् (चवर्ग), त्, थ्,द्,ध्,न् (तवर्ग), प्, फ्,ब्,भ्,म् (पवर्ग), य्,र्,ल्,व् (अंतस्थ), श्,ष्,स् (ऊष्म), ह् (महाप्राण) – अं, अः क, अं, अः ✗ , क, ख✗और प ये चार अयोगवाह हैं।

प्रश्न : ए, ऐ, ओ, औ ये ह्रस्व नहीं होते हैं ?

उत्तर : प्राकृत में ये ह्रस्व भी होते हैं।

कुल अक्षर 64 होते हैं। यथा 27 स्वर + 25 व्यंजन + 4 अंतस्थ + 3 ऊष्म + 1 महाप्राण + 4 योगावगाह 64 इन अक्षरों की संख्या की राशि का प्रमाण का विरलन करके परस्पर गुणा करने से कुल 1,8,4,46,74,40,73,70,95,51,616 प्राप्त होता है। 148 पद्म, 46 शंख,74 नील, 40 खरब, 73 अरब, 70 करोड़, 95लाख, 51हजार, 616 कुल अक्षर होते हैं।

संयुक्ताक्षर : उक्त राशि में से एक कम करने पर संयुक्ताक्षरों का प्रमाण निकल आता है।

विशेष देखें –ध.पु.13/5,5,46/249-260

भाषा और लिपि का इतिहास अनादि है तथा शाश्वत है भाषा द्वीन्द्रिय जीव से लेकर पंचेन्द्रिय तक के सभी संसारी प्राणियों की होती है पर लिपि सभी प्राणियों की नहीं होती है। कुछ भाषा ऐसी है जो परस्पर में संकेत या इशारा से समझी जाती है। पर सुनी नहीं जाती है। जैसे दो इन्द्रिय से चार इन्द्रिय के जीव बोल सकते है किन्तु कर्ण नहीं होने से सुन नहीं सकते है। इसीलिए पंचेन्द्रिय बहरे, पशु–पक्षी तथा मुनष्य आदि बोल सकते है किन्तु सुन नहीं पाते है। कतिपय गूंगे भी लोग है जो बोल नहीं पाते किन्तु पारस्परिक संकेत से ही समझ सकते है।

जैसे कि द्विन्द्रिय लट से लट, केंचुआ से केंचुआ, शंख से शंख अपनी भाषा में संकेतों से बात तो कर लेते है, पर लिख–पढ़ नहीं पाते हैं और सुन नहीं पाते हैं।

इसी प्रकार त्रीन्द्रिय चींटी से चींटी, खटमल से खटमल/चतुरिन्द्रिय मक्खी से मक्खी, भौंरे से भौंरे पंचेन्द्रिय पशु गाय से गाय, हाथी से हाथी, घोड़ा से घोड़ा, पंचेन्द्रिय मोर से मोर, बतख से बतख, चिड़िया से चिड़िया, पंचेन्द्रिय नारकी से नारकी, देव से देव तथा अनेकों अनपढ़ मनुष्य से मनुष्य बात तो कर लेते है पर लिख या पढ़ नहीं पाते हैं।

केवल मनुष्यों में ही कतिपय ऐसे लोग हैं जो बोल भी सकते हैं और लिख–पढ़ भी सकते हैं पर उनमें भी देश–देश की भाषा और लिपियाँ अलग–अलग हैं।

इसका अर्थ है बोलना या बात करना यह भाषा है लिखना तथा पढ़ना यह लिपि है। दोनों अत्यन्त भिन्न है एक नहीं हैं।

भारत में अनेकों भाषाएँ हैं प्राचीन जैन शास्त्रों में 18 महाभाषा तथा 700 क्षुद्र भाषाओं का वर्णन मिलता है। यथा–

मगध, कर्नाटक, मालवा, लाट, गौड़ और गुर्जर इनमें प्रत्येक के तीन–तीन भेद होने से (6ग3)=18 भेद हो जाते हैं। यद्यपि इसमें हिन्दी की परिगणना नहीं है।

इन 718 भाषाओं में स्वतंत्र ऐसी भी अनेक भाषाएँ हैं जिनके लिखने की अनेकों स्वतंत्र लिपियाँ भी हैं।

इन सभी लिपियों में बहुत ही सामान्य है। ये सभी वर्ण मालाएँ एक अत्यन्त तर्क–पूर्ण ध्वन्यात्मक क्रम (Phonetic Order) में व्यवस्थित है। यह क्रम इतना तर्क–पूर्ण है कि अन्तर्राष्ट्रीय ध्वन्यात्मक संघ (IPA) ने अन्तर्राष्ट्रीय ध्वन्यात्मक लिपि के निर्माण के लिये मामूली परिवर्तनों के साथ इसी क्रम को अंगीकार कर लिया है। अनेकों देशों की भाषा व लिपि अलग–अलग हैं कहीं भाषा अलग है कहीं लिपि अलग है।

अनेकों देशों के नाम या व्यक्ति के अथवा भाषा के नामानुसार ही लिपियों नाम है। कहीं कहीं भाषा और लिपि के नाम में अन्तर भी प्राप्त होता है। यथा–

कतिपय भाषाओं की लिपियाँ–

1. **कोंकणी** – यह भाषा अनेकों लिपियों में लिखी जाती रही है। जैसे–देवनागरी कन्नड़, मलयालम और रोमन। गोवा को राज्य का दर्जा मिलने के बाद देवनागरी लिपि में कोंकणी को वहाँ की राज्य भाषा घोषित किया गया है।
2. **मलयालम** – मलयालम में शलाका लिपि प्रसिद्ध है।
3. **मणिपुरी** – मणिपुरी भाषा को **'मेहतेईमाएक'** नामक लिपि में लिखा जाता है।
4. **मराठी** – इस भाषा को लिखने में देवनागरी और इसके प्रवाही स्वरूप मोदी लिपियों का प्रयोग होता है।
5. **नेपाली** – नेपाली भाषा की नेपाली लिपि है।
6. **उड़िया** – उड़िया भाषा की उड़िया लिपि है।
7. **संस्कृत** – संस्कृत भाषा की देवनागरी लिपि है।
8. **सिन्ध** – सिन्ध भाषा की मुख्य दो लिपियाँ हैं 1. अरबी 2. सिन्ध।
9. **संथाली** – इस भाषा की लिपि का प्राचीन नाम ''डनोक–चिकी' है। अंग्रेजी काल में यह रोमन में लिखी जाती है।
10. **उर्दू** – यह भाषा नस्तलीक लिपि में लिखी जाती है, जो कारसी व अरबी लिपि का एक मिला–जुला रूप है यह दांये से बांये लिखी जाती है।
11. **तेलुगू** – तेलुगू भाषा तेलुगू लिपि में लिखी जाती है।
12. **तमिल** – तमिल भाषा तमिल लिपि में लिखी जाती है। इस लिपि का विकास ब्राह्मी लिपि से 'बट्टे–लुडडु' (मुड़े हुए अक्षर) और कोले–लुट्टु (लम्बाकार–अक्षर) के स्थानीय रूपान्तरणों से हुआ है। तमिलनाडू तथा पांडुचेरी में यह राज–भाषा है।
13. **पंजाबी** – पंजाबी भाषा की लिपि 'गुरु मुखी' लिपि है।
14. **मैथिली** – यह भाषा देवनागरी व विरहुता लिपि का मिला हुआ रूप है इसे मिथिलाक्षर या मिथिलाक्षरी भी कहा जाता है।
15. **बंगाली** – इस भाषा की लिपि बांग्ला लिपि है जो ब्राह्मी और असमिया लिपि का ही परिवर्तित रूप है अथवा यह देवनागरी लिपि से कुछ भिन्न है पर बहुत: साम्यता है।

16. असमिया – असमिया भाषा की लिपि मूलत: ब्राह्मी लिपि का ही परिवर्तित रूप है।

17. डोगरी – डोगरी भाषा की लिपि टाकरी लिपि है, जो काफी पुरानी है गुरुमुखी लिपि का प्रादुर्भाव इसी लिपि से माना जाता है।

18. गुजराती – इस भाषा की लिपि गुजराती है जो देवनागरी लिपि से व्युत्पन्न हुई।

19. हिन्दी – इस भाषा की देवनागरी लिपि है।

20. कश्मीरी – 15वीं सदी तक कश्मीरी भाषा केवल शारदा लिपि में लिखी जाती थी। बाद में फारसी का प्रचलन बढ़ गया। वर्तमान में देवनागरी लिपि में लिखी जा रही है।

21. कन्नड़ – कन्नड़ भाषा की कन्नड़ लिपि है जो ब्राह्मी लिपि से व्युत्पन्न एक भारतीय लिपि है।

22. ब्रेल लिपि – इस लिपि का आविष्कार 4 जनवरी 1809 – 6 जनवरी 1852 में फ्रांस के शिक्षाविद् व अन्वेषक 'लुई–ब्रेल ने अंधों के लिए किया था वे स्वयं भी नेत्र विहीन थे। अत: यह लिपि उन्हीं के नाम से प्रसिद्ध हो गयी।

लिपि एक अत्यन्त प्राचीन लेखनी से लेखन करने की महत्वपूर्ण विधा है। अपने मन के विचारों को लिपिबद्ध करने की कला है तथा स्मृति को स्थायित्व देने का एक तरीका है, दूसरे के विचारों को पढ़ने की एक पद्धति है। लिपि एक शाश्वत विद्या है जिसके रूप बदलते रहते है परन्तु अर्थ/चेतना वही की वही रहती है।

वर्तमान लिपियों में सबसे प्राचीन लिपि ब्राह्मी लिपि है जो कि सभी लिपियों की जन्मदात्री जननी मानी जाती है, इस लिपि से ही दुनियाँ भर की सभी लिपियों का अविष्कार हुआ माना जाता है।

ब्राह्मी लिपि– इतिहास

भारत की अयन्त प्राचीन दो लिपियाँ हैं 1. ब्राह्मी 2. खरोष्ठी

ब्राह्मी लिपि– इसका उद्भव आज से अरबों वर्ष पूर्व प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव से हुआ। जब ऋषभदेव गृहस्थावस्था में थे तब उनकी दो पट्टरानियाँ थीं।

(1) महारानी यशस्वती जिनके भरतादि 100 पुत्र तथा ब्राह्मी पुत्री थी।

(2) महारानी सुनंदा जिनके बाहुबली पुत्र तथा सुन्दरी पुत्री थी।

''सप्रश्रय मुपाश्रित्य जगन्नाथं प्रणेमतु:।।'' आ.पु. 16/93

दोनों कन्याओं ने विनय के साथ जगन्नाथ राजा ऋषभदेव के समीप जाकर प्रणाम किया।

'प्रीत्या स्वभङ्कमारोप्य स्पृष्टाघ्राय च मस्तके। आ.पु. 16/94

भगवान ने प्रेम से दोनों कन्याओं को अपनी गोद में बैढ़ाया। उन पर हाथ फेरा और उनका मस्तक सूंधा और पूछा–

''तद्विद्या ग्रहणं यत्नं पुत्रिके कुरुतं युवाम्।। आ.पु. 16/102

हे पुत्रियों तुम दोनों विद्या ग्रहण करने में यत्न करो।

भावे णमसिद्धं पमाणेप्पणु दाहिण वाम करेहिं लिहेप्पिणु
दोहिंमि णिम्मल कंचण वण्णहं अक्खर गणियट्टं कण्णहं।।

अर्थात् महाराजा ऋषभदेव ने **''नम: सिद्धेभ्य:''** कहकर अपने दाहिने और बायें हाथ से लिखकर दोनों पुत्रियों को निर्मल स्वर्ण अक्षरों से वर्ण तथा गणित को किया/समझाया।

विभुकरद्वयेनाभ्यां, लिखिन्नक्षर मालिकाम्।
उपदिशल्लिपि संख्या, स्थानं चङ्कै रनुक्रमात्।।

''आ.पु.श्लो. 104 पर्व 16

विभु श्री ऋषभदेव ने गृहस्थावस्था में अपनी ब्राह्मी और सुन्दरी को क्रमशः दोनों हाथों से अ आ आदि वर्ण माला लिखकर उन्हें (लिपि) लिखने का उपदेश दिया और (अनुक्रम से) इकाई-दहाई अंकों के द्वारा उन्हें संख्या का भी उपदेश दिया। स्वर, व्यंजन, संयुक्ताक्षर, बीजाक्षर, विसर्ग, अनुस्वार जिह्वामूलीय, उपधमानीय और योगवाह को ब्राह्मी ने धारण किया। *(अप्रोगवाद)*

समवादी धरद ब्राह्मी मेघा विन्यति सुन्दरी।
सुन्दरी गणितं स्थान क्रमैः सम्यग्धारयत।।

- आ.पु.श्लो.18 पर्व 16

समस्त शुद्ध अक्षरावली को बुद्धि मति ब्राह्मी पुत्री ने धारण किया और अतिशय सुन्दरी सुन्दरी पुत्री ने इकाई-दहाई आदि स्थानों के क्रम से गणित शास्त्रों को अच्छी तरह से धारण किया।

व्याकरण शास्त्र - 100 से अधिक अध्याय थे।
छन्द शास्त्र - अनेक अध्याय युक्त, उक्ता, अनुक्ता आदि 26 भेद भी बतलाये।
अलंकार शास्त्र - शब्दालंकार अर्थालंकारों के साथ माधुर्य ओज आदि 10 प्राणों/गुणों का वर्णन किया।

ब्राह्मी सुन्दर्यौ पद ज्ञान दीपिकाभिः प्रकाशिता।
कला विद्याश्च निश्शेषाः स्वयं परिणतिंययुः।।

- आ.पु. पर्व 16 श्लो. 116

ब्राह्मी और सुन्दरी दोनों पुत्रियों को पद ज्ञान (व्याकरण ज्ञान) रूपी दीपिका से प्रकाशित हुई समस्त विद्याएँ अपने आप ही परिपक्व अवस्था को प्राप्त हो गई थी।

इदं वर्यु वयश्चेद मिंद शील मनोहराम्।
विद्याया चेद्विभूष्येत सफल जन्म वामिदम्।।

- आ.पु.16 श्लो. 97

तुम दोनों का यह शरीर, यह उम्र, यह शील यदि विद्या से विभूषित किया जाये तो तुम दोनों का यह जन्म सफल हो सकता है।

विद्यावान् पुरुषो लोके संमति यति कोविदैः।
नारी च तद्वतो धत्ते स्त्रीसृष्टेरग्रिमं परम्।।

-आ.पु.पर्व 16 श्लो. 98

इस लोक में विद्यावान् पुरुष पण्डितों के द्वारा भी सम्मान को प्राप्त होता है और विद्यावती स्त्री भी सर्वश्रेष्ठ पद को प्राप्त होती है।

कालान्तर में ऋषभपुत्री ब्राह्मी के नाम से ब्राह्मी लिपि तथा सुन्दरी के नाम से सुन्दरी अक लिपि प्रसिद्ध हुई। इसे अधिकांश विशेषज्ञों ने स्वीकारा है कतिपय विद्वान वैदिक देवता ब्रह्मी से इसका प्रादुभार्व मानते है।

वाग्देवी शारदा ब्राह्मी भारती गीः सरस्वती।
हंसयाना ब्रह्म पुत्री स सदा वरदास्तु वः।।

अर्थात् वाग्देवी, शारदा, भाषा, भारती, गी, सरस्वती, हंसगामनी ब्रह्मपुत्री ये सभी ब्राह्मी के ही नाम हैं पर, लिपि के अर्थ में एक मात्र ब्राह्मी शब्द ही प्रचलित है।

1. सम्राट खारबेल ने दूसरी शताब्दी में खण्डगिरी उदयगिरी की हाथी गुफा में ब्राह्मी लिपि में शिलालेख उत्कीर्ण कराया।
   (सविस्तृत देखें- हमारे द्वारा अनुवादित खारबेल शिलालेख, हाथी गुफा-खण्डगिरी उदयगिरी)

2. मौर्य सम्राट अशोक के तीसरी शताब्दी में ब्राह्मी लिपि में उत्कीर्ण शिलालेखों का व्यापक प्रयोग मिलता है।

3. इससे लगभग 200 वर्ष पूर्व महास्थान, पिप्रता तथा बड़ली से ई.पू. पांचवी शताब्दी के लेख प्राप्त होते है। इन दोनों में काफी समानता दिखाई देती है।

4. प्राचीन लिपियों के ब्यूलर, ओझा इत्यादि विदेशी तथा भारतीय विद्वानों का मानता है कि ब्राह्मी लिपि कम से कम 1000 ई.पू. (अब से लगभग 3000 वर्ष पूर्व) या इससे पूर्व प्रचलित थी।

कपितय विद्वानों की मान्यता है कि ब्राह्मी लिपि सिन्धु घाटी से प्राप्त लेखों की लिपि से विकसित हुई।

सम्राट अशोक के बाद वैसनगर, नानाघाट तथा हाथी गुफा आदि स्थानों से प्राप्त ईसा पूर्व की शताब्दी के लेखों से ब्राह्मी लिपि में अशोक कालीन लिपि में भिन्नता दिखाई देने लगी।

चतुर्थ शताब्दी ईसा के प्रारम्भ में गुप्त साम्राज्य के स्थापित होने के समय में ब्राह्मी लिपि की शैलियों में दो भेद सपष्ट हो चुका था कालान्तर मेंये भेद बढ़ते गये।

वर्तमान में भारत वर्ष में अंग्रेजी और उर्दू भाषाओं/लिपियों को छोड़कर समस्त लिपियाँ ब्राह्मी लिपि से ही विकसित हुई।

''जैनागम'' में कहा है कि – **''सिद्धो वर्ण समाम्नाया:''** – कातन्त्र व्याकरण /सूत्र – 1

अर्थात् वर्णों की आम्नाय स्वत: सिद्ध है।

अथवा

श्री सर्वज्ञ मुखोत्पन्ना, भारतीय बहुभाषणी।
अज्ञान तिमिरं हन्ति, विद्या बहु विकासिनी।।

– *सरस्वती स्तोत्र*

जो भी सर्वज्ञ भगवान के मुख से उत्पन्न हुई है वह भारती बहुभाषणी सरस्वती देवी हम सबके अज्ञान अंधकार को नष्ट करे।

ब्राह्मी भारतीय भाषा

सरस्वती स्तोत्र

ब्राह्मी भारतीय भाषा है। इसमें अनेकों ग्रंथ लिखे गये खारबेल शिलालेख तथा अशोक शिलालेख आज भीअपनी प्राचीनता के साक्ष्य रूप में दस्तक दे रहे हैं।

दूसरी 'खरोष्ठी' लिपि है जो कि दायें से बायें लिखी जाती है। यह उर्दू भाषा की तरह है।

यद्यपि ''बूलर'' का कहना है कि– भारत की प्राचीन लिपि का विकास सामी (सेमि टिकी) लिपि से हुआ जिसके अक्षरों का प्रवेश संभवत: ई.पू. 800 में हुआ है। ई.पू. 500 के लगभग अथवा इससे भी पूर्व भारतीयों द्वारा ब्राह्मीलिपि के विनाश और निर्माण का कार्य बड़े श्रम से सम्पन्न हो गया था।

'बूलर' ने लिपि विद्या सम्बन्धी ग्रंथ में कहा है कि – कुछ नव्यतम प्रमाण के आधार पर भारत में (ब्राह्मी) लिपि के प्रवेश का समय ई.पू. 10 वीं सदी या उससे भी पूर्व स्थिर किया जा सकता है।

पाणिनी ने धातु पाठ में लिपि और लिपि धातु का प्रयोग किया है। डॉ. गौरीशंकर हीराचन्द्र ओझा ने अनेक शास्त्रीय ग्रन्थों के आधार पर सिद्ध किया है कि ''पाणिनी'' और ''यास्क'' से भी अनेक शताब्दि पूर्व भारत में अनेक लिखित ग्रन्थ थे और लेखन कला का प्रयोग होता था।

1. खरबों वर्ष पूर्व ऋषभदेव ने अपनी पुत्री ब्राह्मी को वर्णमाला सिखायी थी जिससे आज भी उस लिपि को ऋषभपुत्री ब्राह्मी के नाम से ही जाना जाता है।

2. ऋषभ पुत्र भरत जिनके नाम से हमारे देश का नाम भारत पड़ा, उसने वृषभाचल पर अपने नाम की प्रशस्ति टंकोत्कीर्ण करायी थी।

3. सुभौम चक्रवर्ती ने णमोकार को पानी में लिखकर अविनय किया था जिससे मरकर वह नरक गया था।

4. मधुपिंगल के समय सामुद्रिक शास्त्र लिखा गया था।

5. आज से 2000 वर्ष पूर्व हुए अर्थात् विक्रम की प्रथम शताब्दि में हुये आचार्य कुन्दकुन्द ने अपने पूर्वभव वाले की पर्याय में जंगल में मिले जैन शास्त्र को किसी मुनिराज ने अपने पूर्वभव को दान दिया था, जिससे वह कालान्तर में महाविद्वान आचार्य कुन्दकुन्द थे जिन्होंने 84 पाहुड़ ग्रंथ लिखे थे।

'बूलर' 'वाटलिक' और 'राय' ने भी प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से भारत में लिपि कला की प्राचीनता स्वीकार की है।

कोलब्रूक, कनिंधम, गौरीशंकर, हीराचंद ओझा आदि भी भारत में लेखन कला का व्यवहार बुद्ध से अनेक शताब्दी पूर्व मानते हैं।

इसी प्रकार मर्यादा पुरुषोत्तम राम के जन्म के पूर्व ही वाल्मीकि ने 'रामायणम्' ग्रन्थ लिखा था।

इसी प्रकार वेद भी लिपिबद्ध थे तभी उन्हें ग्रन्थ का आकार दिया गया और वे पढ़े गये थे। और ये सब भारत में ही थे। जो आज भी पढ़े जाते हैं।

अत: भारत में लेखन कला नहीं थी ऐसा मानना अनुचित हैं।

यह सत्य है कि जैन शास्त्र को लिपिबद्ध नहीं किया जाता है क्योंकि वे फटेंगे, जीर्ण-शीर्ण होंगे, फिकेंगे अत: महान अविनय होगें अत: भगवान या गुरुमुख से सुना जाता था अथवा परंपरा से चली आयी इस परंपरा को **''आगम''** भी कहा जाता था। पश्चात् आज से लगभग साधिक 2000 वर्ष पूर्व श्रुतधराचार्य श्री धरसेन महाराज ने तथा उनकी आज्ञा से आचार्य पुष्पदन्त व आचार्य भूतवली आचार्यों में सर्वप्रथम जैनवेद ''षट्खण्डागम ग्रन्थ'' लिपिबद्ध किये थे। यद्यपि उस समय भारत में लेखन प्रणाली प्रचलित थी पर, धर्म ग्रंथ नहीं लिखे जाते थे। उसका यह अर्थ नहीं कि भारत में लेखन विद्या या लिपि कला का सर्वथा अभाव ही था। **''मैक्समूलर''** आदि कतिपय विद्वानों का कहना है कि- **''वैदिक या वैदिक के लिये प्रचलित श्रुति के आधार पर''** दशोपनिषत्काल तक निश्चित ही भारत में लेखन विद्या या लिपि कला का अभाव था।

'मैक्समूलर'' आदि कतिपय विद्वानों का कहना है कि ''वैदिक या वैदिक के लिए प्रचलित श्रुति के आधार पर ''दशोपनिषत्काल तक निश्चित ही भारत में लेखन विद्या या लिपि कला का अभाव था।

उपरोक्त वाक्य से यह बात तो सिद्ध ही है कि लिपि थी तभी तो आगम वेद या उपनिषद् लिपिबद्ध हुये थे। लिपि बिना लिपिबद्ध होना असंभव ही था। लिपि के विषय में जैन कातन्त्र व्याकरण में कहा है कि-

''सिद्धोवर्ण समाम्नाया:। -''कातन्त्र व्याकरण सूत्र-1''

अर्थात् वर्णों की परंपरा अनादि या शाश्वत सिद्ध है दूसरी बात यह भी ठीक नहीं है कि दशोपनिषत्काल तक निश्चित ही भारत में लेखन विद्या का अभाव था। परन्तु यह भी गलत है क्योंकि अरबों-खरबों वर्षों पूर्व भारत में ही जन्मे महाराजा ऋषभदेव (जैन प्रथम तीर्थंकर) ने अपनी पुत्री-ब्राह्मी के लिये वर्ण विद्या और सुन्दरी के लिये अंक विद्या तथा अनेकों राजकुमारों को 72 कला का उपदेश दिया था। यथा-

''वर्नेल के अनुसार'' (अशोक) लिपि का उद्भव किनीशियावासियों से लिखना-सीखने के बाद उन्हीं की लिपि से हुआ। यूरोप की प्राय: अधिकांश लिपियाँ उसी लिपि में से विकसित मानी गयी है। भारत में इसका प्रवेश ई.पू. 500 से 400 तक के बीच हुआ।

उक्त मत से असहमति प्रकट करते हुये ''बूलर'' अशोक के शिलास्तम्भ अभिलेखों से स्पष्ट है कि ई.पू. चतुर्थ शताब्दी तक लिपि कला भारत में काफी विकसित हो चुकी थी।

प्राचीन यूनानी यात्री लेखकों के अनुसार कागज की और ई. पू. चतुर्थ शताब्दी में भारत को लेखन कला की अच्छी जानकारी थी यह समय चौबीसवें तीर्थंकर भगवान महावीर के समीपवर्ती काल था।

बौद्ध वाङ्मय के आधार पर ई. पू. 400 या (उसके भी पहले ई. पू. छठी सदी तक उस जानकारी की बात प्रमाणित है।)

खण्डगिरि उदयगिरि में जब हमारा प्रवास था तब ब्राह्मी लिपि में लिखे गये खारवेल शिलालेख को समझने की बड़ी जिज्ञासा उत्पन्न हुई, अत: सर्वप्रथम ब्राह्मी लिपि सीखना आवश्यक था अत: कतिपय पुस्तकों के आधार से उसे मैंने स्वयं सीखा, पश्चात् शिलालेख का साङ्गोपांग अनुवाद किया था।

यद्यपि इस कार्य में लगभग दो वर्ष लगे। इसी बीच हमारे संघस्थ श्रमण-श्रमणियों ने भी ब्राह्मी-लिपि सीखने की प्रार्थना की तदनुसार मैंने सभी को ब्राह्मी लिपि को पढ़ाया। ''मेरी इच्छा थी कि ब्राह्मी लिपि भगवान ऋषभदेव द्वारा प्रणीत लिपि है। परन्तु उसमें बहुत ही कम लिपिबद्ध जैनागम है। अत: उस पर आगम ग्रंथ लिपिबद्ध होना चाहिए। ऐसी मेरी भावना को सुन अनेकों महाराज व माताजीयों ने थोड़े ही समय में कुछ ग्रंथों को ब्राह्मी लिपि में लिख दिये।

पश्चात् परम पूज्य आचार्य कुंथुसागर जी महाराज की हीरक जयन्ती के अवसर पर आचार्य श्री गुणधरनंदी जी महाराज की प्रार्थना पर ब्राह्मी लिपि को zoom-app (जूम-ऐप) के माध्यम से सार्वजनिक कक्षा ली जिसमें लगभग 700-800 लोगों ने बड़ी रूचि से भाग लिया तथा 'विराग वाणी IIVE" YOU TUBE CHANNAL के माध्यम से हजारों लोगों ने सीखा व आज भी सीख रहे हैं।

इसी बीच मेरी भी स्वतंत्र लिपि लिखने की इच्छा उत्पन्न हुई और इटावा दिनांक 09/05/2021 से लिपि लिखना प्रारम्भ किया। जो अनवरत एक पर एक लिपियों का सृजन होता गया।

प्रसन्नता की बात है कि लिपियों का लेखन इतना सुगम हो गया कि कुछ लिपि दो दिन में, कुछ एक दिन में, कुछ लिपियाँ तो एक दिन में, दो से पाँच आविष्कृत हुई।

यद्यपि इन लिपियों को लिखने में कुल बारह दिन ही लगे।

तदुपरान्त उनकी बारहखड़ी तथा प्रत्येक की गिनती लिखने में विचार मंथनार्थ संघस्थ श्रमण-श्रमणियों को पढ़ाने का उपक्रम भी चला जिससे लेखनकार्य परिपूर्ण शुद्ध एवं दुरुस्थ हो सका। इन सभी लिपियों को सुन्दर अक्षरों में प्रतिलिपि का कार्य श्रमणी आर्यिका विजिगीषा श्री माताजी ने किया तथा तत्-तत् लिपियों में अनेकों स्तुति, भक्ति, पूजा तथा ग्रन्थों को लिपिबद्ध संघस्थ अनेकों महाराज एवं माताजियों ने किया।

बा.ब्र. प्राची दीदी एवं श्री सुप्रभ भैया ने तो प्रत्येक लिपि का स्वतंत्र फॉट द्वारा उसे कम्प्यूटर के माध्यम से टाईप करने की तकनीकि द्वारा आम लोगों को भी टाईप करने व पढ़ने की कला को प्रस्तुत किया।

लिपि समझने की आवश्यक बातें :-

1. प्रत्येक लिपि अलग-अलग स्थानों में अलग-अलग समय में लिखी गई हैं।
2. प्रत्येक लिपि के वर्णादि मेरी केवल स्वतंत्र वैचारिक कल्पना है इसमें न तो किसी का आधार लिया गया है और न ही किसी की नकल की गई है।
3. प्रत्येक लिपि को वर्तमान प्रचलित हिन्दी लिपि के अनुसार ही लिखा गया है।
4. यद्यपि वर्तमान हिन्दी लिप में ऋ, लृ, तथा ॡ का प्रयोग नहीं है परन्तु मैंने प्राचीन जैन कातन्त्र व्याकरण के अनुसार उन्हें स्वीकार कर निबद्ध किया है।
5. वर्तमान हिन्दी लिपि में मात्राएँ कुछ वर्ण के ऊपर, कुछ वर्ण के नीचे लिखने की पद्धति रही है परन्तु मैंने अपनी इन लिपियों की सभी मात्राओं को वर्ण के ऊपर ही लिखने में स्वतंत्रता दी है।
6. संस्कृत व हिन्दी के अनुसार ही मैंने व्यंजन ह्रस्व, दीर्घ, प्लुत को लिखने की पद्धति का अनुसरण किया है।
7. अनुस्वार तथा विसर्ग लिखने में कहीं-कहीं मैंने स्वतंत्रता भी दी है।
8. रेफ या रकार के लिखने को मैंने **'पूर्व व्यंजनमुपरि पर व्यंजनमध:'** के अनुसार अनुसरण न कर उन्हें यथाक्रम लिखते हुए केवल हलंत का प्रयोग किया है।
9. संयुक्ताक्षरों को कहीं-कहीं स्वतंत्रता भी दी है तो कहीं-कहीं हलंत लगाने की पद्धति को भी अपनाया है।

10. योगवगाह का वर्तमान प्रचलन लगभग शून्य हो गया है अत: उसे स्वतंत्रता न दे पूर्ववत् ही अपनाना चाहिए।

11. !, ?, , ', ', ( ), f", f", ., ।, को हिन्दी लिपि की तरह लिखना और पढ़ना चाहिए।

12. +, द्व, ÷, –, %, =, /, ;, ., ', :, फ , को भी हिन्दी लिपि की तरह लिखना और पढ़ना चाहिए।

13. यद्यपि चन्द्र बिन्दी के स्थान पर केवल बिन्दी लगाने की ही प्राचीन पद्धति थी अत: उसे भी मैंने अनुस्वार के रूप में स्वीकृत किया है।

14. इसी प्रकार कॉपी, हैलीकॉप्टर आदि शब्दों के प्रयोग में ॅ का प्रयोग किया जाता है परन्तु यह ब्राह्मी, प्राकृत, हिन्दी, संस्कृत आदि किसी भी लिपि में नहीं है संभवत: यह इंग्लिश शब्दों के साथ प्रयुक्त मात्रा है। अत: उसे यहाँ स्वीकार नहीं किया है।

15. संधि, समास, प्रत्यय, उपसर्ग, कारक, लिंग तथा कृदन्त या तद्धित शब्द को पूर्ववत् ही स्वीकृत किया है।

विशेष :– भविष्य में और कोई नई खोजों को भी स्थान दिया जायेगा।

गिनती लिखने में यद्यपि मैंने कुछ स्वतंत्र पद्धति को भी अपनाया था परन्तु आम लोगों को सुगमता की दृष्टि से हिन्दी गिनतीवत् ही लिपिबद्ध किया है। उक्त लिपियाँ अपनी बात को गोपनीय (पासवर्ड) रखने के लिए महत्वपूर्ण है। साथ ही अपनी स्वतंत्र लेखनी कला सीखने एवं पढ़ने के लिए भी विशेष स्थान रखती है।

भाषा एवं लिपि विज्ञद्वान हमारे इस प्रयास से अवश्य ही प्रसन्न होंगे। तथपि मेरी ओर से भी त्रुटियाँ होना संभव है। अत: वे मुझे अवश्य ही अवगत कराकर अनुग्रहीत करें ऐसी हम आपसे अपेक्षा रखते है।

इत्यलंविस्तरेण!

क्ष नम:
14/2/2/2548
1/1/2022, मेहगाँव (म.प्र.)

●●●

नियमावली

1. प्रत्येक लिपि में ऋ, ॠ, ऌ, ॡ को स्वतंत्र अक्षर माना गया है।
2. प्रत्येक लिपि में क्ष, त्र, ज्ञ और श्र अक्षरों को भी संयुक्त अक्षर होने पर भी उन्हें स्वतंत्र ही माना है।
3. व्यंजनों को लिखने के लिए उनमें हलंत (्) लगाना चाहिए।
4. स्वरों को मात्रा के रूप में प्रयोग करने के लिए स्वतंत्र किसी मात्रा का प्रयोग की अपेक्षा उन्हें ही अक्षर रूप ही माना है।
5. प्रत्येक लिपि में मात्राएँ अक्षर के ऊपर ही लगाई जाती है। मात्र विराग लिपि में उ, ऊ, ओ, औ की मात्राएँ नीचे लगाई है।

अनुक्रमणिका

1.	ध्वज लिपि	:	13–18
2.	स्वस्तिक लिपि	:	19–24
3.	कलश लिपि	:	25–30
4.	सिद्ध लिपि	:	31–36
5.	अरिहंत लिपि	:	37–42
6.	श्रीजी लिपि	:	43–48
7.	जिन लिपि	:	49–54
8.	श्रुत लिपि	:	55–60
9.	अंकली लिपि	:	61–66
10.	महावीर कीर्ति	:	67–72
11.	विमल लिपि	:	73–78
12.	सन्मति लिपि	:	79–84
13.	भरत लिपि	:	85–90
14.	विराग लिपि	:	91–96
15.	उपाध्याय लिपि	:	97–102
16.	श्रमण लिपि	:	103–108
17.	अनगार लिपि	:	109–114
18.	पिच्छी कमण्डल	:	115–120

ध्वज-लिपि

1

ध्वज लिपि

परम पूज्य गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज

(वर्ण माला)

अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ॠ
ऌ	ॡ	ए	ऐ	ओ	औ	अं	अः

(व्यंजन)

क	ख	ग	घ	ङ
च	छ	ज	झ	ञ
ट	ठ	ड	ढ़	ण
त	थ	द	ध	न
प	फ	ब	भ	म
य	र	ल	व	श	ष
स	ह	क्ष	त्र	ज्ञ	श्र

(बारहखड़ी)

क	का	कि	की	कु	कू	के	कै	को	कौ	कं	कः
ख	खा	खि	खी	खु	खू	खे	खै	खो	खौ	खं	खः
ग	गा	गि	गी	गु	गू	गे	गै	गो	गौ	गं	गः
घ	घा	घि	घी	घु	घू	घे	घै	घो	घौ	घं	घः
च	चा	चि	ची	चु	चू	चे	चै	चो	चौ	चं	चः
छ	छा	छि	छी	छु	छू	छे	छै	छो	छौ	छं	छः
ज	जा	जि	जी	जु	जू	जे	जै	जो	जौ	जं	जः
झ	झा	झि	झी	झु	झू	झे	झै	झो	झौ	झं	झः
ट	टा	टि	टी	टु	टू	टे	टै	टो	टौ	टं	टः
ठ	ठा	ठि	ठी	ठु	ठू	ठे	ठै	ठो	ठौ	ठं	ठः
ड	डा	डि	डी	डु	डू	डे	डै	डो	डौ	डं	डः
ढ़	ढ़	ढ़ि	ढ़ी	ढ़ु	ढ़ू	ढ़े	ढ़ै	ढ़ो	ढ़ौ	ढ़ं	ढ़ः

(बारहखड़ी)

ण	णा	णि	णी	णु	णू	णे	णै	णो	णौ	णं	णः
त	ता	ति	ती	तु	तू	ते	तै	तो	तौ	तं	तः
थ	था	थि	थी	थु	थू	थे	थै	थो	थौ	थं	थः
द	दा	दि	दी	दु	दू	दे	दै	दो	दौ	दं	दः
ध	धा	धि	धी	धु	धू	धे	धै	धो	धौ	धं	धः
न	ना	नि	नी	नु	नू	ने	नै	नो	नौ	नं	नः
प	पा	पि	पी	पु	पू	पे	पै	पो	पौ	पं	पः
फ	फा	फि	फी	फु	फू	फे	फै	फो	फौ	फं	फः
ब	बा	बि	बी	बु	बू	बे	बै	बो	बौ	बं	बः
भ	भा	भि	भी	भु	भू	भे	भै	भो	भौ	भं	भः
म	मा	मि	मी	मु	मू	मे	मै	मो	मौ	मं	मः
य	या	यि	यी	यु	यू	ये	यै	यो	यौ	यं	यः

(बारहखड़ी)

र	रा	रि	री	रु	रू	रे	रै	रो	रौ	रं	रः
ल	ला	लि	ली	लु	लू	ले	लै	लो	लौ	लं	लः
व	वा	वि	वी	वु	वू	वे	वै	वो	वौ	वं	वः
श	शा	शि	शी	शु	शू	शे	शै	शो	शौ	शं	शः
ष	षा	षि	षी	षु	षू	षे	षै	षो	षौ	षं	षः
स	सा	सि	सी	सु	सू	से	सै	सो	सौ	सं	सः
ह	हा	हि	ही	हु	हू	हे	है	हो	हौ	हं	हः
क्ष	क्षा	क्षि	क्षी	क्षु	क्षू	क्षे	क्षै	क्षो	क्षौ	क्षं	क्षः
त्र	त्रा	त्रि	त्री	त्रु	त्रू	त्रे	त्रै	त्रो	त्रौ	त्रं	त्रः
ज्ञ	ज्ञा	ज्ञि	ज्ञी	ज्ञु	ज्ञू	ज्ञे	ज्ञै	ज्ञो	ज्ञौ	ज्ञं	ज्ञः
श्र	श्रा	श्रि	श्री	श्रु	श्रू	श्रे	श्रै	श्रो	श्रौ	श्रं	श्रः

(अंक माला)

1	11	21	31	41	51	61	71	81	91
2	12	22	32	42	52	62	72	82	92
3	13	23	33	43	53	63	73	83	93
4	14	24	34	44	54	64	74	84	94
5	15	25	35	45	55	65	75	85	95
6	16	26	36	46	56	66	76	86	96
7	17	27	37	47	57	67	77	87	97
8	18	28	38	48	58	68	78	88	98
9	19	29	39	49	59	69	79	89	99
10	20	30	40	50	60	70	80	90	100

0

स्वस्तिक लिपि

2

परम पूज्य गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज

卐卐卐 卐卐卐 (वर्ण माला)

अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ॠ
ऌ	ॡ	ए	ऐ	ओ	औ	अं	अः

卐卐卐卐卐 (व्यंजन)

क	ख	ग	घ	ङ	
च	छ	ज	झ	ञ	
ट	ठ	ड	ढ	ण	
त	थ	द	ध	न	
प	फ	ब	भ	म	
य	र	ल	व	श	ष
स	ह	क्ष	त्र	ज्ञ	श्र

(बारहखड़ी)

क	का	कि	की	कु	कू	के	कै	को	कौ	कं	कः
ख	खा	खि	खी	खु	खू	खे	खै	खो	खौ	खं	खः
ग	गा	गि	गी	गु	गू	गे	गै	गो	गौ	गं	गः
घ	घा	घि	घी	घु	घू	घे	घै	घो	घौ	घं	घः
च	चा	चि	ची	चु	चू	चे	चै	चो	चौ	चं	चः
छ	छा	छि	छी	छु	छू	छे	छै	छो	छौ	छं	छः
ज	जा	जि	जी	जु	जू	जे	जै	जो	जौ	जं	जः
झ	झा	झि	झी	झु	झू	झे	झै	झो	झौ	झं	झः
ट	टा	टि	टी	टु	टू	टे	टै	टो	टौ	टं	टः
ठ	ठा	ठि	ठी	ठु	ठू	ठे	ठै	ठो	ठौ	ठं	ठः
ड	डा	डि	डी	डु	डू	डे	डै	डो	डौ	डं	डः
ढ	ढा	ढि	ढी	ढु	ढू	ढे	ढै	ढो	ढौ	ढं	ढः

स्वस्तिक लिपि (बारहखड़ी)

ण	णा	णि	णी	णु	णू	णे	णै	णो	णौ	णं	णः
त	ता	ति	ती	तु	तू	ते	तै	तो	तौ	तं	तः
थ	था	थि	थी	थु	थू	थे	थै	थो	थौ	थं	थः
द	दा	दि	दी	दु	दू	दे	दै	दो	दौ	दं	दः
ध	धा	धि	धी	धु	धू	धे	धै	धो	धौ	धं	धः
न	ना	नि	नी	नु	नू	ने	नै	नो	नौ	नं	नः
प	पा	पि	पी	पु	पू	पे	पै	पो	पौ	पं	पः
फ	फा	फि	फी	फु	फू	फे	फै	फो	फौ	फं	फः
ब	बा	बि	बी	बु	बू	बे	बै	बो	बौ	बं	बः
भ	भा	भि	भी	भु	भू	भे	भै	भो	भौ	भं	भः
म	मा	मि	मी	मु	मू	मे	मै	मो	मौ	मं	मः
य	या	यि	यी	यु	यू	ये	यै	यो	यौ	यं	यः

(बारहखड़ी)

र	रा	रि	री	रु	रू	रे	रै	रो	रौ	रं	रः
ल	ला	लि	ली	लु	लू	ले	लै	लो	लौ	लं	लः
व	वा	वि	वी	वु	वू	वे	वै	वो	वौ	वं	वः
श	शा	शि	शी	शु	शू	शे	शै	शो	शौ	शं	शः
ष	षा	षि	षी	षु	षू	षे	षै	षो	षौ	षं	षः
स	सा	सि	सी	सु	सू	से	सै	सो	सौ	सं	सः
ह	हा	हि	ही	हु	हू	हे	है	हो	हौ	हं	हः
क्ष	क्षा	क्षि	क्षी	क्षु	क्षू	क्षे	क्षै	क्षो	क्षौ	क्षं	क्षः
त्र	त्रा	त्रि	त्री	त्रु	त्रू	त्रे	त्रै	त्रो	त्रौ	त्रं	त्रः
ज्ञ	ज्ञा	ज्ञि	ज्ञी	ज्ञु	ज्ञू	ज्ञे	ज्ञै	ज्ञो	ज्ञौ	ज्ञं	ज्ञः
श्र	श्रा	श्रि	श्री	श्रु	श्रू	श्रे	श्रै	श्रो	श्रौ	श्रं	श्रः

(अंक माला)

1	11	21	31	41	51	61	71	81	91
2	12	22	32	42	52	62	72	82	92
3	13	23	33	43	53	63	73	83	93
4	14	24	34	44	54	64	74	84	94
5	15	25	35	45	55	65	75	85	95
6	16	26	36	46	56	66	76	86	96
7	17	27	37	47	57	67	77	87	97
8	18	28	38	48	58	68	78	88	98
9	19	29	39	49	59	69	79	89	99
10	20	30	40	50	60	70	80	90	100

E

[illegible]

[illegible]

3

कलश लिपि

परम पूज्य गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज

(वर्ण माला)

अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ॠ
ऌ	ॡ	ए	ऐ	ओ	औ	अं	अः

(व्यंजन)

क	ख	ग	घ	ङ
च	छ	ज	झ	ञ
ट	ठ	ड़	ढ़	ण
त	थ	द	ध	न
प	फ	ब	भ	म
य	र	ल	व	श
स	ह	क्ष	त्र	ज्ञ

ष	श्र

(बारहखड़ी)

क	का	कि	की	कु	कू	के	कै	को	कौ	कं	कः
ख	खा	खि	खी	खु	खू	खे	खै	खो	खौ	खं	खः
ग	गा	गि	गी	गु	गू	गे	गै	गो	गौ	गं	गः
घ	घा	घि	घी	घु	घू	घे	घै	घो	घौ	घं	घः
च	चा	चि	ची	चु	चू	चे	चै	चो	चौ	चं	चः
छ	छा	छि	छी	छु	छू	छे	छै	छो	छौ	छं	छः
ज	जा	जि	जी	जु	जू	जे	जै	जो	जौ	जं	जः
झ	झा	झि	झी	झु	झू	झे	झै	झो	झौ	झं	झः
ट	टा	टि	टी	टु	टू	टे	टै	टो	टौ	टं	टः
ठ	ठा	ठि	ठी	ठु	ठू	ठे	ठै	ठो	ठौ	ठं	ठः
ड	डा	डि	डी	डु	डू	डे	डै	डो	डौ	डं	डः
ढ़	ढ़	ढ़ि	ढ़ी	ढ़ु	ढ़ू	ढ़े	ढ़ै	ढ़ो	ढ़ौ	ढ़ं	ढ़ः

(बारहखड़ी)

ण	णा	णि	णी	णु	णू	णे	णै	णो	णौ	णं	णः
त	ता	ति	ती	तु	तू	ते	तै	तो	तौ	तं	तः
थ	था	थि	थी	थु	थू	थे	थै	थो	थौ	थं	थः
द	दा	दि	दी	दु	दू	दे	दै	दो	दौ	दं	दः
ध	धा	धि	धी	धु	धू	धे	धै	धो	धौ	धं	धः
न	ना	नि	नी	नु	नू	ने	नै	नो	नौ	नं	नः
प	पा	पि	पी	पु	पू	पे	पै	पो	पौ	पं	पः
फ	फा	फि	फी	फु	फू	फे	फै	फो	फौ	फं	फः
ब	बा	बि	बी	बु	बू	बे	बै	बो	बौ	बं	बः
भ	भा	भि	भी	भु	भू	भे	भै	भो	भौ	भं	भः
म	मा	मि	मी	मु	मू	मे	मै	मो	मौ	मं	मः
य	या	यि	यी	यु	यू	ये	यै	यो	यौ	यं	यः

(बारहखड़ी)

र	रा	रि	री	रु	रू	रे	रै	रो	रौ	रं	रः
ल	ला	लि	ली	लु	लू	ले	लै	लो	लौ	लं	लः
व	वा	वि	वी	वु	वू	वे	वै	वो	वौ	वं	वः
श	शा	शि	शी	शु	शू	शे	शै	शो	शौ	शं	शः
ष	षा	षि	षी	षु	षू	षे	षै	षो	षौ	षं	षः
स	सा	सि	सी	सु	सू	से	सै	सो	सौ	सं	सः
ह	हा	हि	ही	हु	हू	हे	है	हो	हौ	हं	हः
क्ष	क्षा	क्षि	क्षी	क्षु	क्षू	क्षे	क्षै	क्षो	क्षौ	क्षं	क्षः
त्र	त्रा	त्रि	त्री	त्रु	त्रू	त्रे	त्रै	त्रो	त्रौ	त्रं	त्रः
ज्ञ	ज्ञा	ज्ञि	ज्ञी	ज्ञु	ज्ञू	ज्ञे	ज्ञै	ज्ञो	ज्ञौ	ज्ञं	ज्ञः
श्र	श्रा	श्रि	श्री	श्रु	श्रू	श्रे	श्रै	श्रो	श्रौ	श्रं	श्रः

(अंक माला)

1	11	21	31	41	51	61	71	81	91
2	12	22	32	42	52	62	72	82	92
3	13	23	33	43	53	63	73	83	93
4	14	24	34	44	54	64	74	84	94
5	15	25	35	45	55	65	75	85	95
6	16	26	36	46	56	66	76	86	96
7	17	27	37	47	57	67	77	87	97
8	18	28	38	48	58	68	78	88	98
9	19	29	39	49	59	69	79	89	99
10	20	30	40	50	60	70	80	90	100

𑖊𑖨𑖊 𑖊𑖨

𑖊𑖨𑖊𑖨𑖊𑖨𑖊 𑖊𑖨𑖊𑖨𑖊𑖨𑖊𑖨𑖊𑖨𑖊𑖨𑖊

4

सिद्ध लिपि

परम पूज्य गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज

(बारहखड़ी)

क	का	कि	की	कु	कू	के	कै	को	कौ	कं	कः
ख	खा	खि	खी	खु	खू	खे	खै	खो	खौ	खं	खः
ग	गा	गि	गी	गु	गू	गे	गै	गो	गौ	गं	गः
घ	घा	घि	घी	घु	घू	घे	घै	घो	घौ	घं	घः
च	चा	चि	ची	चु	चू	चे	चै	चो	चौ	चं	चः
छ	छा	छि	छी	छु	छू	छे	छै	छो	छौ	छं	छः
ज	जा	जि	जी	जु	जू	जे	जै	जो	जौ	जं	जः
झ	झा	झि	झी	झु	झू	झे	झै	झो	झौ	झं	झः
ट	टा	टि	टी	टु	टू	टे	टै	टो	टौ	टं	टः
ठ	ठा	ठि	ठी	ठु	ठू	ठे	ठै	ठो	ठौ	ठं	ठः
ड	डा	डि	डी	डु	डू	डे	डै	डो	डौ	डं	डः
ढ़	ढ़	ढ़ि	ढ़ी	ढ़ु	ढ़ू	ढ़े	ढ़ै	ढ़ो	ढ़ौ	ढ़ं	ढ़ः

(बारहखड़ी)

ण	णा	णि	णी	णु	णू	णे	णै	णो	णौ	णं	णः
त	ता	ति	ती	तु	तू	ते	तै	तो	तौ	तं	तः
थ	था	थि	थी	थु	थू	थे	थै	थो	थौ	थं	थः
द	दा	दि	दी	दु	दू	दे	दै	दो	दौ	दं	दः
ध	धा	धि	धी	धु	धू	धे	धै	धो	धौ	धं	धः
न	ना	नि	नी	नु	नू	ने	नै	नो	नौ	नं	नः
प	पा	पि	पी	पु	पू	पे	पै	पो	पौ	पं	पः
फ	फा	फि	फी	फु	फू	फे	फै	फो	फौ	फं	फः
ब	बा	बि	बी	बु	बू	बे	बै	बो	बौ	बं	बः
भ	भा	भि	भी	भु	भू	भे	भै	भो	भौ	भं	भः
म	मा	मि	मी	मु	मू	मे	मै	मो	मौ	मं	मः
य	या	यि	यी	यु	यू	ये	यै	यो	यौ	यं	यः

(बारहखड़ी)

र	रा	रि	री	रु	रू	रे	रै	रो	रौ	रं	र:
ल	ला	लि	ली	लु	लू	ले	लै	लो	लौ	लं	ल:
व	वा	वि	वी	वु	वू	वे	वै	वो	वौ	वं	व:
श	शा	शि	शी	शु	शू	शे	शै	शो	शौ	शं	श:
ष	षा	षि	षी	षु	षू	षे	षै	षो	षौ	षं	ष:
स	सा	सि	सी	सु	सू	से	सै	सो	सौ	सं	स:
ह	हा	हि	ही	हु	हू	हे	है	हो	हौ	हं	ह:
क्ष	क्षा	क्षि	क्षी	क्षु	क्षू	क्षे	क्षै	क्षो	क्षौ	क्षं	क्ष:
त्र	त्रा	त्रि	त्री	त्रु	त्रू	त्रे	त्रै	त्रो	त्रौ	त्रं	त्र:
ज्ञ	ज्ञा	ज्ञि	ज्ञी	ज्ञु	ज्ञू	ज्ञे	ज्ञै	ज्ञो	ज्ञौ	ज्ञं	ज्ञ:
श्र	श्रा	श्रि	श्री	श्रु	श्रू	श्रे	श्रै	श्रो	श्रौ	श्रं	श्र:

(अंक माला)

1	11	21	31	41	51	61	71	81	91
2	12	22	32	42	52	62	72	82	92
3	13	23	33	43	53	63	73	83	93
4	14	24	34	44	54	64	74	84	94
5	15	25	35	45	55	65	75	85	95
6	16	26	36	46	56	66	76	86	96
7	17	27	37	47	57	67	77	87	97
8	18	28	38	48	58	68	78	88	98
9	19	29	39	49	59	69	79	89	99
10	20	30	40	50	60	70	80	90	100

अरिहंत लिपि

5

अरिहंत लिपि

परम पूज्य गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज

(वर्ण माला)

अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ॠ
ऌ	ॡ	ए	ऐ	ओ	औ	अं	अः

(व्यंजन)

क	ख	ग	घ	ङ
च	छ	ज	झ	ञ
ट	ठ	ड	ढ़	ण
त	थ	द	ध	न
प	फ	ब़	भ	म
य	र	ल	व	श	ष
स	ह	क्ष	त्र	ज्ञ	श्र

बारहखड़ी

क	का	कि	की	कु	कू	के	कै	को	कौ	कं	कः
ख	खा	खि	खी	खु	खू	खे	खै	खो	खौ	खं	खः
ग	गा	गि	गी	गु	गू	गे	गै	गो	गौ	गं	गः
घ	घा	घि	घी	घु	घू	घे	घै	घो	घौ	घं	घः
च	चा	चि	ची	चु	चू	चे	चै	चो	चौ	चं	चः
छ	छा	छि	छी	छु	छू	छे	छै	छो	छौ	छं	छः
ज	जा	जि	जी	जु	जू	जे	जै	जो	जौ	जं	जः
झ	झा	झि	झी	झु	झू	झे	झै	झो	झौ	झं	झः
ट	टा	टि	टी	टु	टू	टे	टै	टो	टौ	टं	टः
ठ	ठा	ठि	ठी	ठु	ठू	ठे	ठै	ठो	ठौ	ठं	ठः
ड	डा	डि	डी	डु	डू	डे	डै	डो	डौ	डं	डः
ढ	ढा	ढि	ढी	ढु	ढू	ढे	ढै	ढो	ढौ	ढं	ढः

(बारहखड़ी)

ण	णा	णि	णी	णु	णू	णे	णै	णो	णौ	णं	णः
त	ता	ति	ती	तु	तू	ते	तै	तो	तौ	तं	तः
थ	था	थि	थी	थु	थू	थे	थै	थो	थौ	थं	थः
द	दा	दि	दी	दु	दू	दे	दै	दो	दौ	दं	दः
ध	धा	धि	धी	धु	धू	धे	धै	धो	धौ	धं	धः
न	ना	नि	नी	नु	नू	ने	नै	नो	नौ	नं	नः
प	पा	पि	पी	पु	पू	पे	पै	पो	पौ	पं	पः
फ	फा	फि	फी	फु	फू	फे	फै	फो	फौ	फं	फः
ब	बा	बि	बी	बु	बू	बे	बै	बो	बौ	बं	बः
भ	भा	भि	भी	भु	भू	भे	भै	भो	भौ	भं	भः
म	मा	मि	मी	मु	मू	मे	मै	मो	मौ	मं	मः
य	या	यि	यी	यु	यू	ये	यै	यो	यौ	यं	यः

(बारहखड़ी)

र	रा	रि	री	रु	रू	रे	रै	रो	रौ	रं	रः
ल	ला	लि	ली	लु	लू	ले	लै	लो	लौ	लं	लः
व	वा	वि	वी	वु	वू	वे	वै	वो	वौ	वं	वः
श	शा	शि	शी	शु	शू	शे	शै	शो	शौ	शं	शः
ष	षा	षि	षी	षु	षू	षे	षै	षो	षौ	षं	षः
स	सा	सि	सी	सु	सू	से	सै	सो	सौ	सं	सः
ह	हा	हि	ही	हु	हू	हे	है	हो	हौ	हं	हः
क्ष	क्षा	क्षि	क्षी	क्षु	क्षू	क्षे	क्षै	क्षो	क्षौ	क्षं	क्षः
त्र	त्रा	त्रि	त्री	त्रु	त्रू	त्रे	त्रै	त्रो	त्रौ	त्रं	त्रः
ज्ञ	ज्ञा	ज्ञि	ज्ञी	ज्ञु	ज्ञू	ज्ञे	ज्ञै	ज्ञो	ज्ञौ	ज्ञं	ज्ञः
श्र	श्रा	श्रि	श्री	श्रु	श्रू	श्रे	श्रै	श्रो	श्रौ	श्रं	श्रः

ᐸᐧᐃᑲᓂᐣ (अंक माला)

1	11	21	31	41	51	61	71	81	91
2	12	22	32	42	52	62	72	82	92
3	13	23	33	43	53	63	73	83	93
4	14	24	34	44	54	64	74	84	94
5	15	25	35	45	55	65	75	85	95
6	16	26	36	46	56	66	76	86	96
7	17	27	37	47	57	67	77	87	97
8	18	28	38	48	58	68	78	88	98
9	19	29	39	49	59	69	79	89	99
10	20	30	40	50	60	70	80	90	100

श्री जी लिपि

प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज

6

श्रीजी लिपि

परम पूज्य गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज

प्रर्गी श्रीजी (वर्ण माला)

अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ॠ
लृ	लॄ	ए	ऐ	ओ	औ	अं	अः

प्रर्गी (व्यंजन)

क	ख	ग	घ	ङ
च	छ	ज	झ	ञ
ट	ठ	ड	ढ़	ण
त	थ	द	ध	न
प	फ	ब	भ	म
य	र	ल	व	श
स	ह	क्ष	त्र	ज्ञ

ष	श्र

श्री जी लिपि (बारहखड़ी)

क	का	कि	की	कु	कू	के	कै	को	कौ	कं	कः
ख	खा	खि	खी	खु	खू	खे	खै	खो	खौ	खं	खः
ग	गा	गि	गी	गु	गू	गे	गै	गो	गौ	गं	गः
घ	घा	घि	घी	घु	घू	घे	घै	घो	घौ	घं	घः
च	चा	चि	ची	चु	चू	चे	चै	चो	चौ	चं	चः
छ	छा	छि	छी	छु	छू	छे	छै	छो	छौ	छं	छः
ज	जा	जि	जी	जु	जू	जे	जै	जो	जौ	जं	जः
झ	झा	झि	झी	झु	झू	झे	झै	झो	झौ	झं	झः
ट	टा	टि	टी	टु	टू	टे	टै	टो	टौ	टं	टः
ठ	ठा	ठि	ठी	ठु	ठू	ठे	ठै	ठो	ठौ	ठं	ठः
ड	डा	डि	डी	डु	डू	डे	डै	डो	डौ	डं	डः
ढ	ढा	ढि	ढी	ढु	ढू	ढे	ढै	ढो	ढौ	ढं	ढः

श्री जी लिपि (बारहखड़ी)

ण	णा	णि	णी	णु	णू	णे	णै	णो	णौ	णं	णः
त	ता	ति	ती	तु	तू	ते	तै	तो	तौ	तं	तः
थ	था	थि	थी	थु	थू	थे	थै	थो	थौ	थं	थः
द	दा	दि	दी	दु	दू	दे	दै	दो	दौ	दं	दः
ध	धा	धि	धी	धु	धू	धे	धै	धो	धौ	धं	धः
न	ना	नि	नी	नु	नू	ने	नै	नो	नौ	नं	नः
प	पा	पि	पी	पु	पू	पे	पै	पो	पौ	पं	पः
फ	फा	फि	फी	फु	फू	फे	फै	फो	फौ	फं	फः
व	वा	वि	वी	वु	वू	वे	वै	वो	वौ	वं	वः
भ	भा	भि	भी	भु	भू	भे	भै	भो	भौ	भं	भः
म	मा	मि	मी	मु	मू	मे	मै	मो	मौ	मं	मः
य	या	यि	यी	यु	यू	ये	यै	यो	यौ	यं	यः

[illegible] (बारहखड़ी)

र	रा	रि	री	रु	रू	रे	रै	रो	रौ	रं	रः
ल	ला	लि	ली	लु	लू	ले	लै	लो	लौ	लं	लः
व	वा	वि	वी	वु	वू	वे	वै	वो	वौ	वं	वः
श	शा	शि	शी	शु	शू	शे	शै	शो	शौ	शं	शः
ष	षा	षि	षी	षु	षू	षे	षै	षो	षौ	षं	षः
स	सा	सि	सी	सु	सू	से	सै	सो	सौ	सं	सः
ह	हा	हि	ही	हु	हू	हे	है	हो	हौ	हं	हः
क्ष	क्षा	क्षि	क्षी	क्षु	क्षू	क्षे	क्षै	क्षो	क्षौ	क्षं	क्षः
त्र	त्रा	त्रि	त्री	त्रु	त्रू	त्रे	त्रै	त्रो	त्रौ	त्रं	त्रः
ज्ञ	ज्ञा	ज्ञि	ज्ञी	ज्ञु	ज्ञू	ज्ञे	ज्ञै	ज्ञो	ज्ञौ	ज्ञं	ज्ञः
श्र	श्रा	श्रि	श्री	श्रु	श्रू	श्रे	श्रै	श्रो	श्रौ	श्रं	श्रः

श्री (अंक माला)

1	11	21	31	41	51	61	71	81	91
2	12	22	32	42	52	62	72	82	92
3	13	23	33	43	53	63	73	83	93
4	14	24	34	44	54	64	74	84	94
5	15	25	35	45	55	65	75	85	95
6	16	26	36	46	56	66	76	86	96
7	17	27	37	47	57	67	77	87	97
8	18	28	38	48	58	68	78	88	98
9	19	29	39	49	59	69	79	89	99
10	20	30	40	50	60	70	80	90	100

𑘚𑘿𑘩𑘰 𑘛𑘽𑘰

𑘩𑘽𑘩𑘿𑘨𑘲𑘨𑘲𑘩 𑘝𑘲 𑘨𑘲𑘩𑘿𑘩𑘿𑘩 𑘝𑘲 𑘩𑘿𑘩𑘲𑘩

जिन लिपि

परम पूज्य गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज

१२१ ० १ (वर्ण माला)

अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ॠ
लृ	लॄ	ए	ऐ	ओ	औ	अं	अः

१०५० (व्यंजन)

क	ख	ग	घ	ङ
च	छ	ज	झ	ञ
ट	ठ	ड	ढ़	ण
त	थ	द	ध	न
प	फ	ब	भ	म
य	र	ल	व	श	ष
स	ह	क्ष	त्र	ज्ञ	श्र

(बारहखड़ी)

क	का	कि	की	कु	कू	के	कै	को	कौ	कं	कः
ख	खा	खि	खी	खु	खू	खे	खै	खो	खौ	खं	खः
ग	गा	गि	गी	गु	गू	गे	गै	गो	गौ	गं	गः
घ	घा	घि	घी	घु	घू	घे	घै	घो	घौ	घं	घः
च	चा	चि	ची	चु	चू	चे	चै	चो	चौ	चं	चः
छ	छा	छि	छी	छु	छू	छे	छै	छो	छौ	छं	छः
ज	जा	जि	जी	जु	जू	जे	जै	जो	जौ	जं	जः
झ	झा	झि	झी	झु	झू	झे	झै	झो	झौ	झं	झः
ट	टा	टि	टी	टु	टू	टे	टै	टो	टौ	टं	टः
ठ	ठा	ठि	ठी	ठु	ठू	ठे	ठै	ठो	ठौ	ठं	ठः
ड	डा	डि	डी	डु	डू	डे	डै	डो	डौ	डं	डः
ढ़	ढ़ा	ढ़ि	ढ़ी	ढ़ु	ढ़ू	ढ़े	ढ़ै	ढ़ो	ढ़ौ	ढ़ं	ढ़ः

(बारहखड़ी)

ण	णा	णि	णी	णु	णू	णे	णै	णो	णौ	णं	णः
त	ता	ति	ती	तु	तू	ते	तै	तो	तौ	तं	तः
थ	था	थि	थी	थु	थू	थे	थै	थो	थौ	थं	थः
द	दा	दि	दी	दु	दू	दे	दै	दो	दौ	दं	दः
ध	धा	धि	धी	धु	धू	धे	धै	धो	धौ	धं	धः
न	ना	नि	नी	नु	नू	ने	नै	नो	नौ	नं	नः
प	पा	पि	पी	पु	पू	पे	पै	पो	पौ	पं	पः
फ	फा	फि	फी	फु	फू	फे	फै	फो	फौ	फं	फः
ब	बा	बि	बी	बु	बू	बे	बै	बो	बौ	बं	बः
भ	भा	भि	भी	भु	भू	भे	भै	भो	भौ	भं	भः
म	मा	मि	मी	मु	मू	मे	मै	मो	मौ	मं	मः
य	या	यि	यी	यु	यू	ये	यै	यो	यौ	यं	यः

(बारहखड़ी)

र	रा	रि	री	रु	रू	रे	रै	रो	रौ	रं	रः
ल	ला	लि	ली	लु	लू	ले	लै	लो	लौ	लं	लः
व	वा	वि	वी	वु	वू	वे	वै	वो	वौ	वं	वः
श	शा	शि	शी	शु	शू	शे	शै	शो	शौ	शं	शः
ष	षा	षि	षी	षु	षू	षे	षै	षो	षौ	षं	षः
स	सा	सि	सी	सु	सू	से	सै	सो	सौ	सं	सः
ह	हा	हि	ही	हु	हू	हे	है	हो	हौ	हं	हः
क्ष	क्षा	क्षि	क्षी	क्षु	क्षू	क्षे	क्षै	क्षो	क्षौ	क्षं	क्षः
त्र	त्रा	त्रि	त्री	त्रु	त्रू	त्रे	त्रै	त्रो	त्रौ	त्रं	त्रः
ज्ञ	ज्ञा	ज्ञि	ज्ञी	ज्ञु	ज्ञू	ज्ञे	ज्ञै	ज्ञो	ज्ञौ	ज्ञं	ज्ञः
श्र	श्रा	श्रि	श्री	श्रु	श्रू	श्रे	श्रै	श्रो	श्रौ	श्रं	श्रः

(अंक माला)

1	11	21	31	41	51	61	71	81	91
2	12	22	32	42	52	62	72	82	92
3	13	23	33	43	53	63	73	83	93
4	14	24	34	44	54	64	74	84	94
5	15	25	35	45	55	65	75	85	95
6	16	26	36	46	56	66	76	86	96
7	17	27	37	47	57	67	77	87	97
8	18	28	38	48	58	68	78	88	98
9	19	29	39	49	59	69	79	89	99
10	20	30	40	50	60	70	80	90	100

श्रुत लिपि

परम पूज्य गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज

8

श्रुत लिपि

परम पूज्य गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज

(वर्ण माला)

अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ॠ
ऌ	ॡ	ए	ऐ	ओ	औ	अं	अः

(व्यंजन)

क	ख	ग	घ	ङ
च	छ	ज	झ	ञ
ट	ठ	ड	ढ	ण
त	थ	द	ध	न
प	फ	ब	भ	म
य	र	ल	व	श	ष
स	ह	क्ष	त्र	ज्ञ	श्र

(बारहखड़ी)

क	का	कि	की	कु	कू	के	कै	को	कौ	कं	कः
ख	खा	खि	खी	खु	खू	खे	खै	खो	खौ	खं	खः
ग	गा	गि	गी	गु	गू	गे	गै	गो	गौ	गं	गः
घ	घा	घि	घी	घु	घू	घे	घै	घो	घौ	घं	घः
च	चा	चि	ची	चु	चू	चे	चै	चो	चौ	चं	चः
छ	छा	छि	छी	छु	छू	छे	छै	छो	छौ	छं	छः
ज	जा	जि	जी	जु	जू	जे	जै	जो	जौ	जं	जः
झ	झा	झि	झी	झु	झू	झे	झै	झो	झौ	झं	झः
ट	टा	टि	टी	टु	टू	टे	टै	टो	टौ	टं	टः
ठ	ठा	ठि	ठी	ठु	ठू	ठे	ठै	ठो	ठौ	ठं	ठः
ड	डा	डि	डी	डु	डू	डे	डै	डो	डौ	डं	डः
ढ़	ढ़ा	ढ़ि	ढ़ी	ढ़ु	ढ़ू	ढ़े	ढ़ै	ढ़ो	ढ़ौ	ढ़ं	ढ़ः

(बारहखड़ी)

ण	णा	णि	णी	णु	णू	णे	णै	णो	णौ	णं	णः
त	ता	ति	ती	तु	तू	ते	तै	तो	तौ	तं	तः
थ	था	थि	थी	थु	थू	थे	थै	थो	थौ	थं	थः
द	दा	दि	दी	दु	दू	दे	दै	दो	दौ	दं	दः
ध	धा	धि	धी	धु	धू	धे	धै	धो	धौ	धं	धः
न	ना	नि	नी	नु	नू	ने	नै	नो	नौ	नं	नः
प	पा	पि	पी	पु	पू	पे	पै	पो	पौ	पं	पः
फ	फा	फि	फी	फु	फू	फे	फै	फो	फौ	फं	फः
व	वा	वि	वी	वु	वू	वे	वै	वो	वौ	वं	वः
भ	भा	भि	भी	भु	भू	भे	भै	भो	भौ	भं	भः
म	मा	मि	मी	मु	मू	मे	मै	मो	मौ	मं	मः
य	या	यि	यी	यु	यू	ये	यै	यो	यौ	यं	यः

(बारहखड़ी)

र	रा	रि	री	रु	रू	रे	रै	रो	रौ	रं	रः
ल	ला	लि	ली	लु	लू	ले	लै	लो	लौ	लं	लः
व	वा	वि	वी	वु	वू	वे	वै	वो	वौ	वं	वः
श	शा	शि	शी	शु	शू	शे	शै	शो	शौ	शं	शः
ष	षा	षि	षी	षु	षू	षे	षै	षो	षौ	षं	षः
स	सा	सि	सी	सु	सू	से	सै	सो	सौ	सं	सः
ह	हा	हि	ही	हु	हू	हे	है	हो	हौ	हं	हः
क्ष	क्षा	क्षि	क्षी	क्षु	क्षू	क्षे	क्षै	क्षो	क्षौ	क्षं	क्षः
त्र	त्रा	त्रि	त्री	त्रु	त्रू	त्रे	त्रै	त्रो	त्रौ	त्रं	त्रः
ज्ञ	ज्ञा	ज्ञि	ज्ञी	ज्ञु	ज्ञू	ज्ञे	ज्ञै	ज्ञो	ज्ञौ	ज्ञं	ज्ञः
श्र	श्रा	श्रि	श्री	श्रु	श्रू	श्रे	श्रै	श्रो	श्रौ	श्रं	श्रः

(अंक माला)

1	11	21	31	41	51	61	71	81	91
2	12	22	32	42	52	62	72	82	92
3	13	23	33	43	53	63	73	83	93
4	14	24	34	44	54	64	74	84	94
5	15	25	35	45	55	65	75	85	95
6	16	26	36	46	56	66	76	86	96
7	17	27	37	47	57	67	77	87	97
8	18	28	38	48	58	68	78	88	98
9	19	29	39	49	59	69	79	89	99
10	20	30	40	50	60	70	80	90	100

9

अंकली लिपि

परम पूज्य गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज

(वर्ण माला)

अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ॠ
ऌ	ॡ	ए	ऐ	ओ	औ	अं	अः

(व्यंजन)

क	ख	ग	घ	ङ
च	छ	ज	झ	ञ
ट	ठ	ड	ढ़	ण
त	थ	द	ध	न
प	फ	ब	भ	म
य	र	ल	व	श	ष
स	ह	क्ष	त्र	ज्ञ	श्र

बारहखड़ी

क	का	कि	की	कु	कू	के	कै	को	कौ	कं	क:
ख	खा	खि	खी	खु	खू	खे	खै	खो	खौ	खं	ख:
ग	गा	गि	गी	गु	गू	गे	गै	गो	गौ	गं	ग:
घ	घा	घि	घी	घु	घू	घे	घै	घो	घौ	घं	घ:
च	चा	चि	ची	चु	चू	चे	चै	चो	चौ	चं	च:
छ	छा	छि	छी	छु	छू	छे	छै	छो	छौ	छं	छ:
ज	जा	जि	जी	जु	जू	जे	जै	जो	जौ	जं	ज:
झ	झा	झि	झी	झु	झू	झे	झै	झो	झौ	झं	झ:
ट	टा	टि	टी	टु	टू	टे	टै	टो	टौ	टं	ट:
ठ	ठा	ठि	ठी	ठु	ठू	ठे	ठै	ठो	ठौ	ठं	ठ:
ड	डा	डि	डी	डु	डू	डे	डै	डो	डौ	डं	ड:
ढ	ढा	ढि	ढी	ढु	ढू	ढे	ढै	ढो	ढौ	ढं	ढ:

(बारहखड़ी)

ण	णा	णि	णी	णु	णू	णे	णै	णो	णौ	णं	णः
त	ता	ति	ती	तु	तू	ते	तै	तो	तौ	तं	तः
थ	था	थि	थी	थु	थू	थे	थै	थो	थौ	थं	थः
द	दा	दि	दी	दु	दू	दे	दै	दो	दौ	दं	दः
ध	धा	धि	धी	धु	धू	धे	धै	धो	धौ	धं	धः
न	ना	नि	नी	नु	नू	ने	नै	नो	नौ	नं	नः
प	पा	पि	पी	पु	पू	पे	पै	पो	पौ	पं	पः
फ	फा	फि	फी	फु	फू	फे	फै	फो	फौ	फं	फः
ब	बा	बि	बी	बु	बू	बे	बै	बो	बौ	बं	बः
भ	भा	भि	भी	भु	भू	भे	भै	भो	भौ	भं	भः
म	मा	मि	मी	मु	मू	मे	मै	मो	मौ	मं	मः
य	या	यि	यी	यु	यू	ये	यै	यो	यौ	यं	यः

बारहखड़ी

र	रा	रि	री	रु	रू	रे	रै	रो	रौ	रं	रः
ल	ला	लि	ली	लु	लू	ले	लै	लो	लौ	लं	लः
व	वा	वि	वी	वु	वू	वे	वै	वो	वौ	वं	वः
श	शा	शि	शी	शु	शू	शे	शै	शो	शौ	शं	शः
ष	षा	षि	षी	षु	षू	षे	षै	षो	षौ	षं	षः
स	सा	सि	सी	सु	सू	से	सै	सो	सौ	सं	सः
ह	हा	हि	ही	हु	हू	हे	है	हो	हौ	हं	हः
क्ष	क्षा	क्षि	क्षी	क्षु	क्षू	क्षे	क्षै	क्षो	क्षौ	क्षं	क्षः
त्र	त्रा	त्रि	त्री	त्रु	त्रू	त्रे	त्रै	त्रो	त्रौ	त्रं	त्रः
ज्ञ	ज्ञा	ज्ञि	ज्ञी	ज्ञु	ज्ञू	ज्ञे	ज्ञै	ज्ञो	ज्ञौ	ज्ञं	ज्ञः
श्र	श्रा	श्रि	श्री	श्रु	श्रू	श्रे	श्रै	श्रो	श्रौ	श्रं	श्रः

(अंक माला)

1	11	21	31	41	51	61	71	81	91
2	12	22	32	42	52	62	72	82	92
3	13	23	33	43	53	63	73	83	93
4	14	24	34	44	54	64	74	84	94
5	15	25	35	45	55	65	75	85	95
6	16	26	36	46	56	66	76	86	96
7	17	27	37	47	57	67	77	87	97
8	18	28	38	48	58	68	78	88	98
9	19	29	39	49	59	69	79	89	99
10	20	30	40	50	60	70	80	90	100

१०

𑖮𑖲𑖨𑖭𑖽𑖩 𑖭𑖲𑖩

𑖣.𑖬.𑖨𑖲𑖭𑖽𑖩 𑖨𑖭𑖨𑖲𑖨𑖲𑖨 𑖮𑖲𑖨𑖭

10

महावीर कीर्ति लिपि

परम पूज्य गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज

(वर्ण माला)

अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ॠ
ऌ	ॡ	ए	ऐ	ओ	औ	अं	अः

(व्यंजन)

क	ख	ग	घ	ङ
च	छ	ज	झ	ञ
ट	ठ	ड	ढ़	ण
त	थ	द	ध	न
प	फ	ब	भ	म
य	र	ल	व	श	ष
स	ह	क्ष	त्र	ज्ञ	श्र

(बारहखड़ी)

क	का	कि	की	कु	कू	के	कै	को	कौ	कं	कः
ख	खा	खि	खी	खु	खू	खे	खै	खो	खौ	खं	खः
ग	गा	गि	गी	गु	गू	गे	गै	गो	गौ	गं	गः
घ	घा	घि	घी	घु	घू	घे	घै	घो	घौ	घं	घः
च	चा	चि	ची	चु	चू	चे	चै	चो	चौ	चं	चः
छ	छा	छि	छी	छु	छू	छे	छै	छो	छौ	छं	छः
ज	जा	जि	जी	जु	जू	जे	जै	जो	जौ	जं	जः
झ	झा	झि	झी	झु	झू	झे	झै	झो	झौ	झं	झः
ट	टा	टि	टी	टु	टू	टे	टै	टो	टौ	टं	टः
ठ	ठा	ठि	ठी	ठु	ठू	ठे	ठै	ठो	ठौ	ठं	ठः
ड	डा	डि	डी	डु	डू	डे	डै	डो	डौ	डं	डः
ढ़	ढ़	ढ़ि	ढ़ी	ढ़ु	ढ़ू	ढ़े	ढ़ै	ढ़ो	ढ़ौ	ढ़ं	ढ़ः

(बारहखड़ी)

ण	णा	णि	णी	णु	णू	णे	णै	णो	णौ	णं	णः
त	ता	ति	ती	तु	तू	ते	तै	तो	तौ	तं	तः
थ	था	थि	थी	थु	थू	थे	थै	थो	थौ	थं	थः
द	दा	दि	दी	दु	दू	दे	दै	दो	दौ	दं	दः
ध	धा	धि	धी	धु	धू	धे	धै	धो	धौ	धं	धः
न	ना	नि	नी	नु	नू	ने	नै	नो	नौ	नं	नः
प	पा	पि	पी	पु	पू	पे	पै	पो	पौ	पं	पः
फ	फा	फि	फी	फु	फू	फे	फै	फो	फौ	फं	फः
ब	बा	बि	बी	बु	बू	बे	बै	बो	बौ	बं	बः
भ	भा	भि	भी	भु	भू	भे	भै	भो	भौ	भं	भः
म	मा	मि	मी	मु	मू	मे	मै	मो	मौ	मं	मः
य	या	यि	यी	यु	यू	ये	यै	यो	यौ	यं	यः

(बारहखड़ी)

र	रा	रि	री	रु	रू	रे	रै	रो	रौ	रं	रः
ल	ला	लि	ली	लु	लू	ले	लै	लो	लौ	लं	लः
व	वा	वि	वी	वु	वू	वे	वै	वो	वौ	वं	वः
श	शा	शि	शी	शु	शू	शे	शै	शो	शौ	शं	शः
ष	षा	षि	षी	षु	षू	षे	षै	षो	षौ	षं	षः
स	सा	सि	सी	सु	सू	से	सै	सो	सौ	सं	सः
ह	हा	हि	ही	हु	हू	हे	है	हो	हौ	हं	हः
क्ष	क्षा	क्षि	क्षी	क्षु	क्षू	क्षे	क्षै	क्षो	क्षौ	क्षं	क्षः
त्र	त्रा	त्रि	त्री	त्रु	त्रू	त्रे	त्रै	त्रो	त्रौ	त्रं	त्रः
ज्ञ	ज्ञा	ज्ञि	ज्ञी	ज्ञु	ज्ञू	ज्ञे	ज्ञै	ज्ञो	ज्ञौ	ज्ञं	ज्ञः
श्र	श्रा	श्रि	श्री	श्रु	श्रू	श्रे	श्रै	श्रो	श्रौ	श्रं	श्रः

(अंक माला)

1	11	21	31	41	51	61	71	81	91
2	12	22	32	42	52	62	72	82	92
3	13	23	33	43	53	63	73	83	93
4	14	24	34	44	54	64	74	84	94
5	15	25	35	45	55	65	75	85	95
6	16	26	36	46	56	66	76	86	96
7	17	27	37	47	57	67	77	87	97
8	18	28	38	48	58	68	78	88	98
9	19	29	39	49	59	69	79	89	99
10	20	30	40	50	60	70	80	90	100

११

ततः तः तः

11

विमल लिपि

परम पूज्य गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज

(वर्ण माला)

अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ॠ
ऌ	ॡ	ए	ऐ	ओ	औ	अं	अः

(व्यंजन)

क	ख	ग	घ	ङ
च	छ	ज	झ	ञ
ट	ठ	ड	ढ़	ण
त	थ	द	ध	न
प	फ	ब	भ	म
य	र	ल	व	श	ष
स	ह	क्ष	त्र	ज्ञ	श्र

(बारहखड़ी)

क	का	कि	की	कु	कू	के	कै	को	कौ	कं	कः
ख	खा	खि	खी	खु	खू	खे	खै	खो	खौ	खं	खः
ग	गा	गि	गी	गु	गू	गे	गै	गो	गौ	गं	गः
घ	घा	घि	घी	घु	घू	घे	घै	घो	घौ	घं	घः
च	चा	चि	ची	चु	चू	चे	चै	चो	चौ	चं	चः
छ	छा	छि	छी	छु	छू	छे	छै	छो	छौ	छं	छः
ज	जा	जि	जी	जु	जू	जे	जै	जो	जौ	जं	जः
झ	झा	झि	झी	झु	झू	झे	झै	झो	झौ	झं	झः
ट	टा	टि	टी	टु	टू	टे	टै	टो	टौ	टं	टः
ठ	ठा	ठि	ठी	ठु	ठू	ठे	ठै	ठो	ठौ	ठं	ठः
ड	डा	डि	डी	डु	डू	डे	डै	डो	डौ	डं	डः
ढ	ढा	ढि	ढी	ढु	ढू	ढे	ढै	ढो	ढौ	ढं	ढः

(बारहखड़ी)

ण	णा	णि	णी	णु	णू	णे	णै	णो	णौ	णं	णः
त	ता	ति	ती	तु	तू	ते	तै	तो	तौ	तं	तः
थ	था	थि	थी	थु	थू	थे	थै	थो	थौ	थं	थः
द	दा	दि	दी	दु	दू	दे	दै	दो	दौ	दं	दः
ध	धा	धि	धी	धु	धू	धे	धै	धो	धौ	धं	धः
न	ना	नि	नी	नु	नू	ने	नै	नो	नौ	नं	नः
प	पा	पि	पी	पु	पू	पे	पै	पो	पौ	पं	पः
फ	फा	फि	फी	फु	फू	फे	फै	फो	फौ	फं	फः
ब	बा	बि	बी	बु	बू	बे	बै	बो	बौ	बं	बः
भ	भा	भि	भी	भु	भू	भे	भै	भो	भौ	भं	भः
म	मा	मि	मी	मु	मू	मे	मै	मो	मौ	मं	मः
य	या	यि	यी	यु	यू	ये	यै	यो	यौ	यं	यः

(बारहखड़ी)

र	रा	रि	री	रु	रू	रे	रै	रो	रौ	रं	रः
ल	ला	लि	ली	लु	लू	ले	लै	लो	लौ	लं	लः
व	वा	वि	वी	वु	वू	वे	वै	वो	वौ	वं	वः
श	शा	शि	शी	शु	शू	शे	शै	शो	शौ	शं	शः
ष	षा	षि	षी	षु	षू	षे	षै	षो	षौ	षं	षः
स	सा	सि	सी	सु	सू	से	सै	सो	सौ	सं	सः
ह	हा	हि	ही	हु	हू	हे	है	हो	हौ	हं	हः
क्ष	क्षा	क्षि	क्षी	क्षु	क्षू	क्षे	क्षै	क्षो	क्षौ	क्षं	क्षः
त्र	त्रा	त्रि	त्री	त्रु	त्रू	त्रे	त्रै	त्रो	त्रौ	त्रं	त्रः
ज्ञ	ज्ञा	ज्ञि	ज्ञी	ज्ञु	ज्ञू	ज्ञे	ज्ञै	ज्ञो	ज्ञौ	ज्ञं	ज्ञः
श्र	श्रा	श्रि	श्री	श्रु	श्रू	श्रे	श्रै	श्रो	श्रौ	श्रं	श्रः

[illegible] (अंक माला)

[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
1	11	21	31	41	51	61	71	81	91
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
2	12	22	32	42	52	62	72	82	92
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
3	13	23	33	43	53	63	73	83	93
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
4	14	24	34	44	54	64	74	84	94
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
5	15	25	35	45	55	65	75	85	95
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
6	16	26	36	46	56	66	76	86	96
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
7	17	27	37	47	57	67	77	87	97
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
8	18	28	38	48	58	68	78	88	98
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
9	19	29	39	49	59	69	79	89	99
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
10	20	30	40	50	60	70	80	90	100

IL

[illegible]

[illegible]

12

सन्मति लिपि

परम पूज्य गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज

(वर्ण माला)

अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ॠ
ऌ	ॡ	ए	ऐ	ओ	औ	अं	अः

(व्यंजन)

क	ख	ग	घ	ङ
च	छ	ज	झ	ञ
ट	ठ	ड	ढ़	ण
त	थ	द	ध	न
प	फ	ब	भ	म
य	र	ल	व	श
स	ह	क्ष	त्र	ज्ञ

ष	श्र

(बारहखड़ी)

क	का	कि	की	कु	कू	के	कै	को	कौ	कं	कः
ख	खा	खि	खी	खु	खू	खे	खै	खो	खौ	खं	खः
ग	गा	गि	गी	गु	गू	गे	गै	गो	गौ	गं	गः
घ	घा	घि	घी	घु	घू	घे	घै	घो	घौ	घं	घः
च	चा	चि	ची	चु	चू	चे	चै	चो	चौ	चं	चः
छ	छा	छि	छी	छु	छू	छे	छै	छो	छौ	छं	छः
ज	जा	जि	जी	जु	जू	जे	जै	जो	जौ	जं	जः
झ	झा	झि	झी	झु	झू	झे	झै	झो	झौ	झं	झः
ट	टा	टि	टी	टु	टू	टे	टै	टो	टौ	टं	टः
ठ	ठा	ठि	ठी	ठु	ठू	ठे	ठै	ठो	ठौ	ठं	ठः
ड	डा	डि	डी	डु	डू	डे	डै	डो	डौ	डं	डः
ढ	ढा	ढि	ढी	ढु	ढू	ढे	ढै	ढो	ढौ	ढं	ढः

(बारहखड़ी)

ण	णा	णि	णी	णु	णू	णे	णै	णो	णौ	णं	णः
त	ता	ति	ती	तु	तू	ते	तै	तो	तौ	तं	तः
थ	था	थि	थी	थु	थू	थे	थै	थो	थौ	थं	थः
द	दा	दि	दी	दु	दू	दे	दै	दो	दौ	दं	दः
ध	धा	धि	धी	धु	धू	धे	धै	धो	धौ	धं	धः
न	ना	नि	नी	नु	नू	ने	नै	नो	नौ	नं	नः
प	पा	पि	पी	पु	पू	पे	पै	पो	पौ	पं	पः
फ	फा	फि	फी	फु	फू	फे	फै	फो	फौ	फं	फः
ब	बा	बि	बी	बु	बू	बे	बै	बो	बौ	बं	बः
भ	भा	भि	भी	भु	भू	भे	भै	भो	भौ	भं	भः
म	मा	मि	मी	मु	मू	मे	मै	मो	मौ	मं	मः
य	या	यि	यी	यु	यू	ये	यै	यो	यौ	यं	यः

(बारहखड़ी)

र	रा	रि	री	रु	रू	रे	रै	रो	रौ	रं	रः
ल	ला	लि	ली	लु	लू	ले	लै	लो	लौ	लं	लः
व	वा	वि	वी	वु	वू	वे	वै	वो	वौ	वं	वः
श	शा	शि	शी	शु	शू	शे	शै	शो	शौ	शं	शः
ष	षा	षि	षी	षु	षू	षे	षै	षो	षौ	षं	षः
स	सा	सि	सी	सु	सू	से	सै	सो	सौ	सं	सः
ह	हा	हि	ही	हु	हू	हे	है	हो	हौ	हं	हः
क्ष	क्षा	क्षि	क्षी	क्षु	क्षू	क्षे	क्षै	क्षो	क्षौ	क्षं	क्षः
त्र	त्रा	त्रि	त्री	त्रु	त्रू	त्रे	त्रै	त्रो	त्रौ	त्रं	त्रः
ज्ञ	ज्ञा	ज्ञि	ज्ञी	ज्ञु	ज्ञू	ज्ञे	ज्ञै	ज्ञो	ज्ञौ	ज्ञं	ज्ञः
श्र	श्रा	श्रि	श्री	श्रु	श्रू	श्रे	श्रै	श्रो	श्रौ	श्रं	श्रः

(अंक माला)

1	11	21	31	41	51	61	71	81	91
2	12	22	32	42	52	62	72	82	92
3	13	23	33	43	53	63	73	83	93
4	14	24	34	44	54	64	74	84	94
5	15	25	35	45	55	65	75	85	95
6	16	26	36	46	56	66	76	86	96
7	17	27	37	47	57	67	77	87	97
8	18	28	38	48	58	68	78	88	98
9	19	29	39	49	59	69	79	89	99
10	20	30	40	50	60	70	80	90	100

ధర్మ దేశన

పరమ పూజ్య గణాచార్య శ్రీ విరాగసాగర్ జీ మహారాజ్

13

भरत लिपि

परम पूज्य गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज

(वर्ण माला)

अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ॠ
ऌ	ॡ	ए	ऐ	ओ	औ	अं	अः

(व्यंजन)

क	ख	ग	घ	ङ
च	छ	ज	झ	ञ
ट	ठ	ड	ढ़	ण
त	थ	द	ध	न
प	फ	ब	भ	म
य	र	ल	व	श
स	ह	क्ष	त्र	ज्ञ

ष	श्र

(बारहखड़ी)

क	का	कि	की	कु	कू	के	कै	को	कौ	कं	कः
ख	खा	खि	खी	खु	खू	खे	खै	खो	खौ	खं	खः
ग	गा	गि	गी	गु	गू	गे	गै	गो	गौ	गं	गः
घ	घा	घि	घी	घु	घू	घे	घै	घो	घौ	घं	घः
च	चा	चि	ची	चु	चू	चे	चै	चो	चौ	चं	चः
छ	छा	छि	छी	छु	छू	छे	छै	छो	छौ	छं	छः
ज	जा	जि	जी	जु	जू	जे	जै	जो	जौ	जं	जः
झ	झा	झि	झी	झु	झू	झे	झै	झो	झौ	झं	झः
ट	टा	टि	टी	टु	टू	टे	टै	टो	टौ	टं	टः
ठ	ठा	ठि	ठी	ठु	ठू	ठे	ठै	ठो	ठौ	ठं	ठः
ड	डा	डि	डी	डु	डू	डे	डै	डो	डौ	डं	डः
ढ	ढा	ढि	ढी	ढु	ढू	ढे	ढै	ढो	ढौ	ढं	ढः

(बारहखड़ी)

ण	णा	णि	णी	णु	णू	णे	णै	णो	णौ	णं	णः
त	ता	ति	ती	तु	तू	ते	तै	तो	तौ	तं	तः
थ	था	थि	थी	थु	थू	थे	थै	थो	थौ	थं	थः
द	दा	दि	दी	दु	दू	दे	दै	दो	दौ	दं	दः
ध	धा	धि	धी	धु	धू	धे	धै	धो	धौ	धं	धः
न	ना	नि	नी	नु	नू	ने	नै	नो	नौ	नं	नः
प	पा	पि	पी	पु	पू	पे	पै	पो	पौ	पं	पः
फ	फा	फि	फी	फु	फू	फे	फै	फो	फौ	फं	फः
ब	बा	बि	बी	बु	बू	बे	बै	बो	बौ	बं	बः
भ	भा	भि	भी	भु	भू	भे	भै	भो	भौ	भं	भः
म	मा	मि	मी	मु	मू	मे	मै	मो	मौ	मं	मः
य	या	यि	यी	यु	यू	ये	यै	यो	यौ	यं	यः

(बारहखड़ी)

र	रा	रि	री	रु	रू	रे	रै	रो	रौ	रं	रः
ल	ला	लि	ली	लु	लू	ले	लै	लो	लौ	लं	लः
व	वा	वि	वी	वु	वू	वे	वै	वो	वौ	वं	वः
श	शा	शि	शी	शु	शू	शे	शै	शो	शौ	शं	शः
ष	षा	षि	षी	षु	षू	षे	षै	षो	षौ	षं	षः
स	सा	सि	सी	सु	सू	से	सै	सो	सौ	सं	सः
ह	हा	हि	ही	हु	हू	हे	है	हो	हौ	हं	हः
क्ष	क्षा	क्षि	क्षी	क्षु	क्षू	क्षे	क्षै	क्षो	क्षौ	क्षं	क्षः
त्र	त्रा	त्रि	त्री	त्रु	त्रू	त्रे	त्रै	त्रो	त्रौ	त्रं	त्रः
ज्ञ	ज्ञा	ज्ञि	ज्ञी	ज्ञु	ज्ञू	ज्ञे	ज्ञै	ज्ञो	ज्ञौ	ज्ञं	ज्ञः
श्र	श्रा	श्रि	श्री	श्रु	श्रू	श्रे	श्रै	श्रो	श्रौ	श्रं	श्रः

(अंक माला)

1	11	21	31	41	51	61	71	81	91
2	12	22	32	42	52	62	72	82	92
3	13	23	33	43	53	63	73	83	93
4	14	24	34	44	54	64	74	84	94
5	15	25	35	45	55	65	75	85	95
6	16	26	36	46	56	66	76	86	96
7	17	27	37	47	57	67	77	87	97
8	18	28	38	48	58	68	78	88	98
9	19	29	39	49	59	69	79	89	99
10	20	30	40	50	60	70	80	90	100

TE

[illegible]

[illegible]

14

विराग लिपि

परम पूज्य गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज

(वर्ण माला)

अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ॠ
ऌ	ॡ	ए	ऐ	ओ	औ	अं	अः

(व्यंजन)

क	ख	ग	घ	ङ
च	छ	ज	झ	ञ
ट	ठ	ड	ढ़	ण
त	थ	द	ध	न
प	फ	ब	भ	म
य	र	ल	व	श	ष
स	ह	क्ष	त्र	ज्ञ	श्र

(बारहखड़ी)

क	का	कि	की	कु	कू	के	कै	को	कौ	कं	कः
ख	खा	खि	खी	खु	खू	खे	खै	खो	खौ	खं	खः
ग	गा	गि	गी	गु	गू	गे	गै	गो	गौ	गं	गः
घ	घा	घि	घी	घु	घू	घे	घै	घो	घौ	घं	घः
च	चा	चि	ची	चु	चू	चे	चै	चो	चौ	चं	चः
छ	छा	छि	छी	छु	छू	छे	छै	छो	छौ	छं	छः
ज	जा	जि	जी	जु	जू	जे	जै	जो	जौ	जं	जः
झ	झा	झि	झी	झु	झू	झे	झै	झो	झौ	झं	झः
ट	टा	टि	टी	टु	टू	टे	टै	टो	टौ	टं	टः
ठ	ठा	ठि	ठी	ठु	ठू	ठे	ठै	ठो	ठौ	ठं	ठः
ड	डा	डि	डी	डु	डू	डे	डै	डो	डौ	डं	डः
ढ	ढा	ढि	ढी	ढु	ढू	ढे	ढै	ढो	ढौ	ढं	ढः

(बारहखड़ी)

ण	णा	णि	णी	णु	णू	णे	णै	णो	णौ	णं	णः
त	ता	ति	ती	तु	तू	ते	तै	तो	तौ	तं	तः
थ	था	थि	थी	थु	थू	थे	थै	थो	थौ	थं	थः
द	दा	दि	दी	दु	दू	दे	दै	दो	दौ	दं	दः
ध	धा	धि	धी	धु	धू	धे	धै	धो	धौ	धं	धः
न	ना	नि	नी	नु	नू	ने	नै	नो	नौ	नं	नः
प	पा	पि	पी	पु	पू	पे	पै	पो	पौ	पं	पः
फ	फा	फि	फी	फु	फू	फे	फै	फो	फौ	फं	फः
ब	बा	बि	बी	बु	बू	बे	बै	बो	बौ	बं	बः
भ	भा	भि	भी	भु	भू	भे	भै	भो	भौ	भं	भः
म	मा	मि	मी	मु	मू	मे	मै	मो	मौ	मं	मः
य	या	यि	यी	यु	यू	ये	यै	यो	यौ	यं	यः

(बारहखड़ी)

र	रा	रि	री	रु	रू	रे	रै	रो	रौ	रं	रः
ल	ला	लि	ली	लु	लू	ले	लै	लो	लौ	लं	लः
व	वा	वि	वी	वु	वू	वे	वै	वो	वौ	वं	वः
श	शा	शि	शी	शु	शू	शे	शै	शो	शौ	शं	शः
ष	षा	षि	षी	षु	षू	षे	षै	षो	षौ	षं	षः
स	सा	सि	सी	सु	सू	से	सै	सो	सौ	सं	सः
ह	हा	हि	ही	हु	हू	हे	है	हो	हौ	हं	हः
क्ष	क्षा	क्षि	क्षी	क्षु	क्षू	क्षे	क्षै	क्षो	क्षौ	क्षं	क्षः
त्र	त्रा	त्रि	त्री	त्रु	त्रू	त्रे	त्रै	त्रो	त्रौ	त्रं	त्रः
ज्ञ	ज्ञा	ज्ञि	ज्ञी	ज्ञु	ज्ञू	ज्ञे	ज्ञै	ज्ञो	ज्ञौ	ज्ञं	ज्ञः
श्र	श्रा	श्रि	श्री	श्रु	श्रू	श्रे	श्रै	श्रो	श्रौ	श्रं	श्रः

(अंक माला)

1	11	21	31	41	51	61	71	81	91
2	12	22	32	42	52	62	72	82	92
3	13	23	33	43	53	63	73	83	93
4	14	24	34	44	54	64	74	84	94
5	15	25	35	45	55	65	75	85	95
6	16	26	36	46	56	66	76	86	96
7	17	27	37	47	57	67	77	87	97
8	18	28	38	48	58	68	78	88	98
9	19	29	39	49	59	69	79	89	99
10	20	30	40	50	60	70	80	90	100

[illegible]

[illegible]

15

उपाध्याय लिपि

परम पूज्य गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज

(वर्ण माला)

अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ॠ
ऌ	ॡ	ए	ऐ	ओ	औ	अं	अः

(व्यंजन)

क	ख	ग	घ	ङ
च	छ	ज	झ	ञ
ट	ठ	ड	ढ़	ण
त	थ	द	ध	न
प	फ	ब	भ	म
य	र	ल	व	श	ष
स	ह	क्ष	त्र	ज्ञ	श्र

(बारहखड़ी)

क	का	कि	की	कु	कू	के	कै	को	कौ	कं	कः
ख	खा	खि	खी	खु	खू	खे	खै	खो	खौ	खं	खः
ग	गा	गि	गी	गु	गू	गे	गै	गो	गौ	गं	गः
घ	घा	घि	घी	घु	घू	घे	घै	घो	घौ	घं	घः
च	चा	चि	ची	चु	चू	चे	चै	चो	चौ	चं	चः
छ	छा	छि	छी	छु	छू	छे	छै	छो	छौ	छं	छः
ज	जा	जि	जी	जु	जू	जे	जै	जो	जौ	जं	जः
झ	झा	झि	झी	झु	झू	झे	झै	झो	झौ	झं	झः
ट	टा	टि	टी	टु	टू	टे	टै	टो	टौ	टं	टः
ठ	ठा	ठि	ठी	ठु	ठू	ठे	ठै	ठो	ठौ	ठं	ठः
ड	डा	डि	डी	डु	डू	डे	डै	डो	डौ	डं	डः
ढ	ढा	ढि	ढी	ढु	ढू	ढे	ढै	ढो	ढौ	ढं	ढः

(बारहखड़ी)

ण	णा	णि	णी	णु	णू	णे	णै	णो	णौ	णं	णः
त	ता	ति	ती	तु	तू	ते	तै	तो	तौ	तं	तः
थ	था	थि	थी	थु	थू	थे	थै	थो	थौ	थं	थः
द	दा	दि	दी	दु	दू	दे	दै	दो	दौ	दं	दः
ध	धा	धि	धी	धु	धू	धे	धै	धो	धौ	धं	धः
न	ना	नि	नी	नु	नू	ने	नै	नो	नौ	नं	नः
प	पा	पि	पी	पु	पू	पे	पै	पो	पौ	पं	पः
फ	फा	फि	फी	फु	फू	फे	फै	फो	फौ	फं	फः
ब	बा	बि	बी	बु	बू	बे	बै	बो	बौ	बं	बः
भ	भा	भि	भी	भु	भू	भे	भै	भो	भौ	भं	भः
म	मा	मि	मी	मु	मू	मे	मै	मो	मौ	मं	मः
य	या	यि	यी	यु	यू	ये	यै	यो	यौ	यं	यः

(बारहखड़ी)

र	रा	रि	री	रु	रू	रे	रै	रो	रौ	रं	रः
ल	ला	लि	ली	लु	लू	ले	लै	लो	लौ	लं	लः
व	वा	वि	वी	वु	वू	वे	वै	वो	वौ	वं	वः
श	शा	शि	शी	शु	शू	शे	शै	शो	शौ	शं	शः
ष	षा	षि	षी	षु	षू	षे	षै	षो	षौ	षं	षः
स	सा	सि	सी	सु	सू	से	सै	सो	सौ	सं	सः
ह	हा	हि	ही	हु	हू	हे	है	हो	हौ	हं	हः
क्ष	क्षा	क्षि	क्षी	क्षु	क्षू	क्षे	क्षै	क्षो	क्षौ	क्षं	क्षः
त्र	त्रा	त्रि	त्री	त्रु	त्रू	त्रे	त्रै	त्रो	त्रौ	त्रं	त्रः
ज्ञ	ज्ञा	ज्ञि	ज्ञी	ज्ञु	ज्ञू	ज्ञे	ज्ञै	ज्ञो	ज्ञौ	ज्ञं	ज्ञः
श्र	श्रा	श्रि	श्री	श्रु	श्रू	श्रे	श्रै	श्रो	श्रौ	श्रं	श्रः

𑄇𑄟𑄨𑄚 (अंक माला)

𑄇 1	𑄇𑄇 11	𑄇𑄈 21	𑄇𑄉 31	𑄇𑄊 41	𑄇𑄋 51	𑄇𑄌 61	𑄇𑄍 71	𑄇𑄎 81	𑄇𑄏 91
𑄈 2	𑄈𑄇 12	𑄈𑄈 22	𑄈𑄉 32	𑄈𑄊 42	𑄈𑄋 52	𑄈𑄌 62	𑄈𑄍 72	𑄈𑄎 82	𑄈𑄏 92
𑄉 3	𑄉𑄇 13	𑄉𑄈 23	𑄉𑄉 33	𑄉𑄊 43	𑄉𑄋 53	𑄉𑄌 63	𑄉𑄍 73	𑄉𑄎 83	𑄉𑄏 93
𑄊 4	𑄊𑄇 14	𑄊𑄈 24	𑄊𑄉 34	𑄊𑄊 44	𑄊𑄋 54	𑄊𑄌 64	𑄊𑄍 74	𑄊𑄎 84	𑄊𑄏 94
𑄋 5	𑄋𑄇 15	𑄋𑄈 25	𑄋𑄉 35	𑄋𑄊 45	𑄋𑄋 55	𑄋𑄌 65	𑄋𑄍 75	𑄋𑄎 85	𑄋𑄏 95
𑄌 6	𑄌𑄇 16	𑄌𑄈 26	𑄌𑄉 36	𑄌𑄊 46	𑄌𑄋 56	𑄌𑄌 66	𑄌𑄍 76	𑄌𑄎 86	𑄌𑄏 96
𑄍 7	𑄍𑄇 17	𑄍𑄈 27	𑄍𑄉 37	𑄍𑄊 47	𑄍𑄋 57	𑄍𑄌 67	𑄍𑄍 77	𑄍𑄎 87	𑄍𑄏 97
𑄎 8	𑄎𑄇 18	𑄎𑄈 28	𑄎𑄉 38	𑄎𑄊 48	𑄎𑄋 58	𑄎𑄌 68	𑄎𑄍 78	𑄎𑄎 88	𑄎𑄏 98
𑄏 9	𑄏𑄇 19	𑄏𑄈 29	𑄏𑄉 39	𑄏𑄊 49	𑄏𑄋 59	𑄏𑄌 69	𑄏𑄍 79	𑄏𑄎 89	𑄏𑄏 99
𑄇𑄐 10	𑄈𑄐 20	𑄉𑄐 30	𑄊𑄐 40	𑄋𑄐 50	𑄌𑄐 60	𑄍𑄐 70	𑄎𑄐 80	𑄏𑄐 90	𑄇𑄐𑄐 100

𑖨𑖽𑖟𑖨𑖿𑖤

𑖥𑖨𑖽𑖟𑖨𑖿𑖤 𑖨𑖽 𑖥𑖨𑖽𑖟𑖨𑖿𑖤 𑖨𑖽 𑖨𑖽𑖟𑖨𑖿𑖤

16

श्रमण लिपि

परम पूज्य गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज

(वर्ण माला)

अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ॠ
ऌ	ॡ	ए	ऐ	ओ	औ	अं	अः

(व्यंजन)

क	ख	ग	घ	ङ
च	छ	ज	झ	ञ
ट	ठ	ड	ढ़	ण
त	थ	द	ध	न
प	फ	ब	भ	म
य	र	ल	व	श	ष
स	ह	क्ष	त्र	ज्ञ	श्र

(बारहखड़ी)

क	का	कि	की	कु	कू	के	कै	को	कौ	कं	कः
ख	खा	खि	खी	खु	खू	खे	खै	खो	खौ	खं	खः
ग	गा	गि	गी	गु	गू	गे	गै	गो	गौ	गं	गः
घ	घा	घि	घी	घु	घू	घे	घै	घो	घौ	घं	घः
च	चा	चि	ची	चु	चू	चे	चै	चो	चौ	चं	चः
छ	छा	छि	छी	छु	छू	छे	छै	छो	छौ	छं	छः
ज	जा	जि	जी	जु	जू	जे	जै	जो	जौ	जं	जः
झ	झा	झि	झी	झु	झू	झे	झै	झो	झौ	झं	झः
ट	टा	टि	टी	टु	टू	टे	टै	टो	टौ	टं	टः
ठ	ठा	ठि	ठी	ठु	ठू	ठे	ठै	ठो	ठौ	ठं	ठः
ड	डा	डि	डी	डु	डू	डे	डै	डो	डौ	डं	डः
ढ़	ढ़ा	ढ़ि	ढ़ी	ढ़ु	ढ़ू	ढ़े	ढ़ै	ढ़ो	ढ़ौ	ढ़ं	ढ़ः

(बारहखड़ी)

ण	णा	णि	णी	णु	णू	णे	णै	णो	णौ	णं	णः
त	ता	ति	ती	तु	तू	ते	तै	तो	तौ	तं	तः
थ	था	थि	थी	थु	थू	थे	थै	थो	थौ	थं	थः
द	दा	दि	दी	दु	दू	दे	दै	दो	दौ	दं	दः
ध	धा	धि	धी	धु	धू	धे	धै	धो	धौ	धं	धः
न	ना	नि	नी	नु	नू	ने	नै	नो	नौ	नं	नः
प	पा	पि	पी	पु	पू	पे	पै	पो	पौ	पं	पः
फ	फा	फि	फी	फु	फू	फे	फै	फो	फौ	फं	फः
ब	बा	बि	बी	बु	बू	बे	बै	बो	बौ	बं	बः
भ	भा	भि	भी	भु	भू	भे	भै	भो	भौ	भं	भः
म	मा	मि	मी	मु	मू	मे	मै	मो	मौ	मं	मः
य	या	यि	यी	यु	यू	ये	यै	यो	यौ	यं	यः

(बारहखड़ी)

र	रा	रि	री	रु	रू	रे	रै	रो	रौ	रं	रः
ल	ला	लि	ली	लु	लू	ले	लै	लो	लौ	लं	लः
व	वा	वि	वी	वु	वू	वे	वै	वो	वौ	वं	वः
श	शा	शि	शी	शु	शू	शे	शै	शो	शौ	शं	शः
ष	षा	षि	षी	षु	षू	षे	षै	षो	षौ	षं	षः
स	सा	सि	सी	सु	सू	से	सै	सो	सौ	सं	सः
ह	हा	हि	ही	हु	हू	हे	है	हो	हौ	हं	हः
क्ष	क्षा	क्षि	क्षी	क्षु	क्षू	क्षे	क्षै	क्षो	क्षौ	क्षं	क्षः
त्र	त्रा	त्रि	त्री	त्रु	त्रू	त्रे	त्रै	त्रो	त्रौ	त्रं	त्रः
ज्ञ	ज्ञा	ज्ञि	ज्ञी	ज्ञु	ज्ञू	ज्ञे	ज्ञै	ज्ञो	ज्ञौ	ज्ञं	ज्ञः
श्र	श्रा	श्रि	श्री	श्रु	श्रू	श्रे	श्रै	श्रो	श्रौ	श्रं	श्रः

(अंक माला)

1	11	21	31	41	51	61	71	81	91
2	12	22	32	42	52	62	72	82	92
3	13	23	33	43	53	63	73	83	93
4	14	24	34	44	54	64	74	84	94
5	15	25	35	45	55	65	75	85	95
6	16	26	36	46	56	66	76	86	96
7	17	27	37	47	57	67	77	87	97
8	18	28	38	48	58	68	78	88	98
9	19	29	39	49	59	69	79	89	99
10	20	30	40	50	60	70	80	90	100

ii

ಚಾರಿತ್ರ ಗ್ರಂಥ

ಣಮೋಕಾರ ಮಹಾಮಂತ್ರ

17

अनगार लिपि

परम पूज्य गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज

(वर्ण माला)

अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ॠ
ऌ	ॡ	ए	ऐ	ओ	औ	अं	अः

(व्यंजन)

क	ख	ग	घ	ङ
च	छ	ज	झ	ञ
ट	ठ	ड	ढ़	ण
त	थ	द	ध	न
प	फ	ब	भ	म
य	र	ल	व	श
स	ह	क्ष	त्र	ज्ञ

(बारहखड़ी)

क	का	कि	की	कु	कू	के	कै	को	कौ	कं	कः
ख	खा	खि	खी	खु	खू	खे	खै	खो	खौ	खं	खः
ग	गा	गि	गी	गु	गू	गे	गै	गो	गौ	गं	गः
घ	घा	घि	घी	घु	घू	घे	घै	घो	घौ	घं	घः
च	चा	चि	ची	चु	चू	चे	चै	चो	चौ	चं	चः
छ	छा	छि	छी	छु	छू	छे	छै	छो	छौ	छं	छः
ज	जा	जि	जी	जु	जू	जे	जै	जो	जौ	जं	जः
झ	झा	झि	झी	झु	झू	झे	झै	झो	झौ	झं	झः
ट	टा	टि	टी	टु	टू	टे	टै	टो	टौ	टं	टः
ठ	ठा	ठि	ठी	ठु	ठू	ठे	ठै	ठो	ठौ	ठं	ठः
ड	डा	डि	डी	डु	डू	डे	डै	डो	डौ	डं	डः
ढ़	ढ़ा	ढ़ि	ढ़ी	ढ़ु	ढ़ू	ढ़े	ढ़ै	ढ़ो	ढ़ौ	ढ़ं	ढ़ः

(बारहखड़ी)

ण	णा	णि	णी	णु	णू	णे	णै	णो	णौ	णं	णः
त	ता	ति	ती	तु	तू	ते	तै	तो	तौ	तं	तः
थ	था	थि	थी	थु	थू	थे	थै	थो	थौ	थं	थः
द	दा	दि	दी	दु	दू	दे	दै	दो	दौ	दं	दः
ध	धा	धि	धी	धु	धू	धे	धै	धो	धौ	धं	धः
न	ना	नि	नी	नु	नू	ने	नै	नो	नौ	नं	नः
प	पा	पि	पी	पु	पू	पे	पै	पो	पौ	पं	पः
फ	फा	फि	फी	फु	फू	फे	फै	फो	फौ	फं	फः
ब	बा	बि	बी	बु	बू	बे	बै	बो	बौ	बं	बः
भ	भा	भि	भी	भु	भू	भे	भै	भो	भौ	भं	भः
म	मा	मि	मी	मु	मू	मे	मै	मो	मौ	मं	मः
य	या	यि	यी	यु	यू	ये	यै	यो	यौ	यं	यः

(बारहखड़ी)

र	रा	रि	री	रु	रू	रे	रै	रो	रौ	रं	रः
ल	ला	लि	ली	लु	लू	ले	लै	लो	लौ	लं	लः
व	वा	वि	वी	वु	वू	वे	वै	वो	वौ	वं	वः
श	शा	शि	शी	शु	शू	शे	शै	शो	शौ	शं	शः
ष	षा	षि	षी	षु	षू	षे	षै	षो	षौ	षं	षः
स	सा	सि	सी	सु	सू	से	सै	सो	सौ	सं	सः
ह	हा	हि	ही	हु	हू	हे	है	हो	हौ	हं	हः
क्ष	क्षा	क्षि	क्षी	क्षु	क्षू	क्षे	क्षै	क्षो	क्षौ	क्षं	क्षः
त्र	त्रा	त्रि	त्री	त्रु	त्रू	त्रे	त्रै	त्रो	त्रौ	त्रं	त्रः
ज्ञ	ज्ञा	ज्ञि	ज्ञी	ज्ञु	ज्ञू	ज्ञे	ज्ञै	ज्ञो	ज्ञौ	ज्ञं	ज्ञः
श्र	श्रा	श्रि	श्री	श्रु	श्रू	श्रे	श्रै	श्रो	श्रौ	श्रं	श्रः

ہندسے (अंक माला)

1	11	21	31	41	51	61	71	81	91
2	12	22	32	42	52	62	72	82	92
3	13	23	33	43	53	63	73	83	93
4	14	24	34	44	54	64	74	84	94
5	15	25	35	45	55	65	75	85	95
6	16	26	36	46	56	66	76	86	96
7	17	27	37	47	57	67	77	87	97
8	18	28	38	48	58	68	78	88	98
9	19	29	39	49	59	69	79	89	99
10	20	30	40	50	60	70	80	90	100

[illegible]

[illegible]

18

पिच्छी कमण्डलु

परम पूज्य गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज

(वर्ण माला)

अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ॠ
ऌ	ॡ	ए	ऐ	ओ	औ	अं	अः

(व्यंजन)

क	ख	ग	घ	ङ
च	छ	ज	झ	ञ
ट	ठ	ड	ढ़	ण
त	थ	द	ध	न
प	फ	ब	भ	म
य	र	ल	व	श	ष
स	ह	क्ष	त्र	ज्ञ	श्र

(बारहखड़ी)

क	का	कि	की	कु	कू	के	कै	को	कौ	कं	कः
ख	खा	खि	खी	खु	खू	खे	खै	खो	खौ	खं	खः
ग	गा	गि	गी	गु	गू	गे	गै	गो	गौ	गं	गः
घ	घा	घि	घी	घु	घू	घे	घै	घो	घौ	घं	घः
च	चा	चि	ची	चु	चू	चे	चै	चो	चौ	चं	चः
छ	छा	छि	छी	छु	छू	छे	छै	छो	छौ	छं	छः
ज	जा	जि	जी	जु	जू	जे	जै	जो	जौ	जं	जः
झ	झा	झि	झी	झु	झू	झे	झै	झो	झौ	झं	झः
ट	टा	टि	टी	टु	टू	टे	टै	टो	टौ	टं	टः
ठ	ठा	ठि	ठी	ठु	ठू	ठे	ठै	ठो	ठौ	ठं	ठः
ड	डा	डि	डी	डु	डू	डे	डै	डो	डौ	डं	डः
ढ़	ढ़	ढ़ि	ढ़ी	ढ़ु	ढ़ू	ढ़े	ढ़ै	ढ़ो	ढ़ौ	ढ़ं	ढ़ः

(बारहखड़ी)

ण	णा	णि	णी	णु	णू	णे	णै	णो	णौ	णं	णः
त	ता	ति	ती	तु	तू	ते	तै	तो	तौ	तं	तः
थ	था	थि	थी	थु	थू	थे	थै	थो	थौ	थं	थः
द	दा	दि	दी	दु	दू	दे	दै	दो	दौ	दं	दः
ध	धा	धि	धी	धु	धू	धे	धै	धो	धौ	धं	धः
न	ना	नि	नी	नु	नू	ने	नै	नो	नौ	नं	नः
प	पा	पि	पी	पु	पू	पे	पै	पो	पौ	पं	पः
फ	फा	फि	फी	फु	फू	फे	फै	फो	फौ	फं	फः
ब	बा	बि	बी	बु	बू	बे	बै	बो	बौ	बं	बः
भ	भा	भि	भी	भु	भू	भे	भै	भो	भौ	भं	भः
म	मा	मि	मी	मु	मू	मे	मै	मो	मौ	मं	मः
य	या	यि	यी	यु	यू	ये	यै	यो	यौ	यं	यः

(बारहखड़ी)

र	रा	रि	री	रु	रू	रे	रै	रो	रौ	रं	रः
ल	ला	लि	ली	लु	लू	ले	लै	लो	लौ	लं	लः
व	वा	वि	वी	वु	वू	वे	वै	वो	वौ	वं	वः
श	शा	शि	शी	शु	शू	शे	शै	शो	शौ	शं	शः
ष	षा	षि	षी	षु	षू	षे	षै	षो	षौ	षं	षः
स	सा	सि	सी	सु	सू	से	सै	सो	सौ	सं	सः
ह	हा	हि	ही	हु	हू	हे	है	हो	हौ	हं	हः
क्ष	क्षा	क्षि	क्षी	क्षु	क्षू	क्षे	क्षै	क्षो	क्षौ	क्षं	क्षः
त्र	त्रा	त्रि	त्री	त्रु	त्रू	त्रे	त्रै	त्रो	त्रौ	त्रं	त्रः
ज्ञ	ज्ञा	ज्ञि	ज्ञी	ज्ञु	ज्ञू	ज्ञे	ज्ञै	ज्ञो	ज्ञौ	ज्ञं	ज्ञः
श्र	श्रा	श्रि	श्री	श्रु	श्रू	श्रे	श्रै	श्रो	श्रौ	श्रं	श्रः

(अंक माला)

1	11	21	31	41	51	61	71	81	91
2	12	22	32	42	52	62	72	82	92
3	13	23	33	43	53	63	73	83	93
4	14	24	34	44	54	64	74	84	94
5	15	25	35	45	55	65	75	85	95
6	16	26	36	46	56	66	76	86	96
7	17	27	37	47	57	67	77	87	97
8	18	28	38	48	58	68	78	88	98
9	19	29	39	49	59	69	79	89	99
10	20	30	40	50	60	70	80	90	100

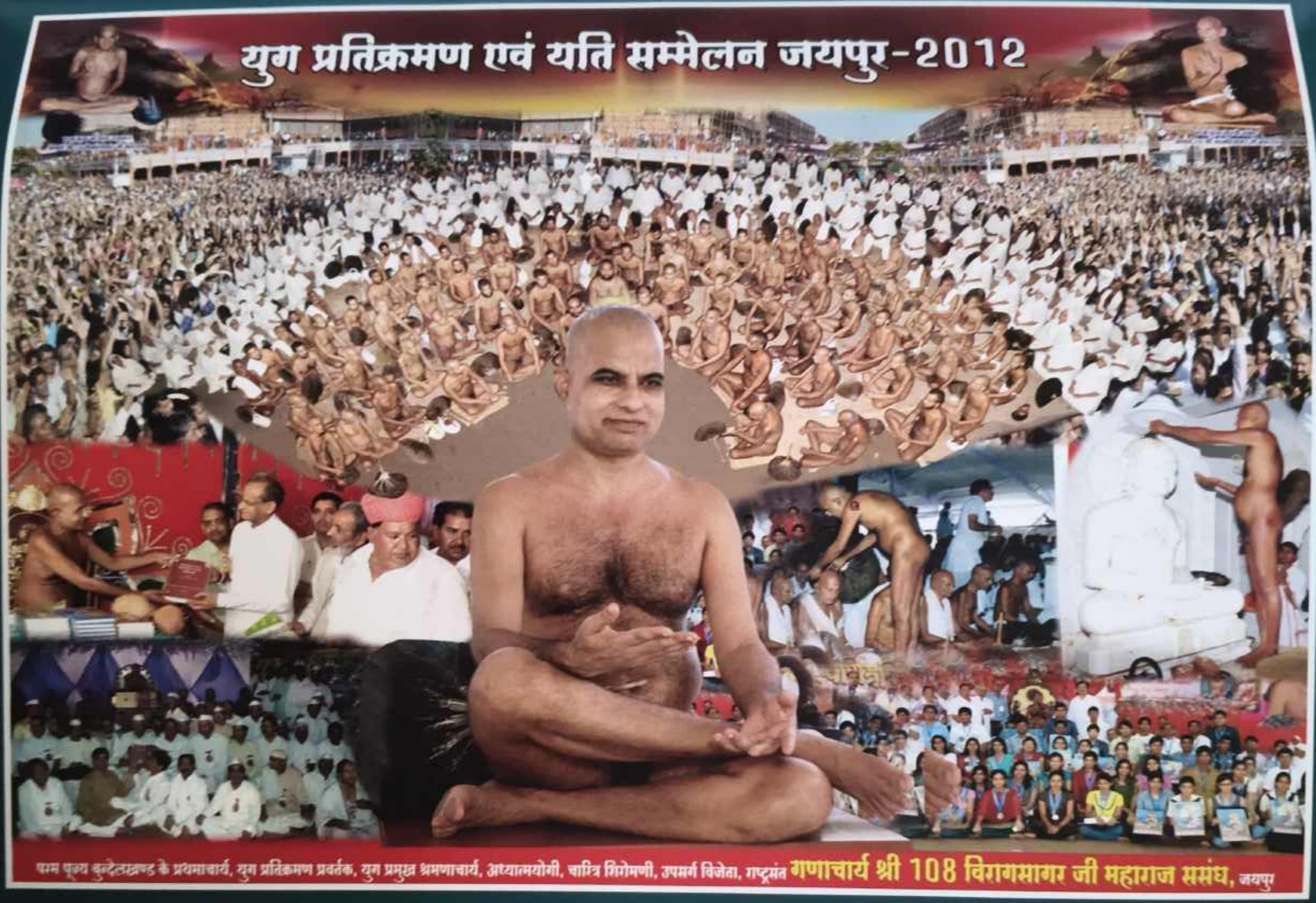
युग प्रतिक्रमण एवं यति सम्मेलन जयपुर-2012
परम पूज्य बुन्देलखण्ड के प्रथमाचार्य, युग प्रतिक्रमण प्रवर्तक, युग प्रमुख श्रमणाचार्य, अध्यात्मयोगी, चारित्र शिरोमणी, उपसर्ग विजेता, राष्ट्रसंत गणाचार्य श्री 108 विरागसागर जी महाराज ससंघ, जयपुर

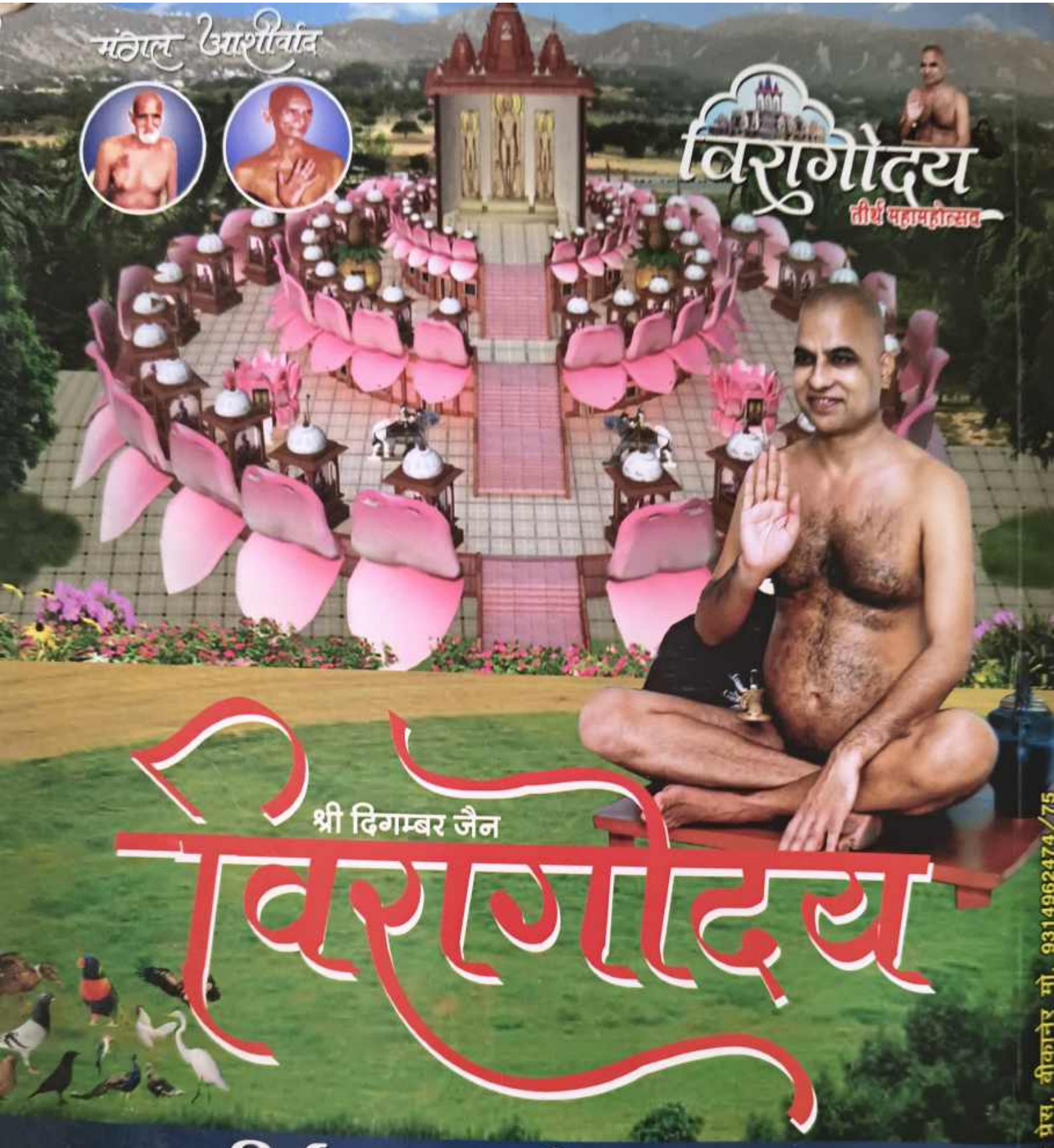

तीर्थ महामहोत्सव-2023

पथरिया, जिला दमोह (म.प्र.)

आशीर्वाद : परम पूज्य उपसर्ग विजेता, बुन्देलखण्ड के आदर्श रत्न, भारत गौरव, राष्ट्रसंत, गणाचार्य श्री 108 विरागसागर जी महामुनिराज

virag vani live | virag vani | virag vani | virag vani 8349231361 | www.viragvani.com

मुद्रक : त्रिलोक प्रिंटिंग प्रेस, बीकानेर मो. 9314962474/75